प्राक्कथन

इस छोटे से उपन्यास में सामाजिक रूढ़ियों एवं बुराइयों की ओर संकेत किया गया है। तस्करी भी एक समस्या है। यह उपन्यास २१ जून, १६७६ को हल्दीघाटी दिवस पर लिखना प्रारंभ किया गया था, इसीलिए इसको सामाजिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कई जगह हल्दी घाटी शब्द भी इसी अर्थ का द्योतक है। 'पीले हाथ' भी इसी वैवाहिक संघर्ष की उत्पत्ति है। इसका दूसरा भाग प्रेस में जा रहा है।

श्री रामगोपाल गोयनका एवं श्री मणिलाल जालान ने पूर्ण सहयोग का वचन दिया है—धन्यवाद। प० अक्षय चन्द्र शर्मा ने भी विचार विमर्श कर अपना मूल्यवान समय दिया है। श्री बाबूलाल मुरारका, श्री ओम प्रकाश नेवटिया, श्री मुन्नालाल अग्रवाल का भी सहयोग मिला है।

शिवरात्रि

१६ फरवरी १६७७ —प्रो० गोविंद अग्रवाल

सामाजिक रूढ़ियों से संघर्ष रत
संस्थाओं को समर्पित—

आर्य समाज

ब्रह्म समाज

युग निर्माण योजना

अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन

अ० भा० जैन महासभा

अ० भा० माहेश्वरी महासभा आदि



उपन्यास के विषय में—

रूढ़ियाँ एक सर्वभारतीय समस्या है—इसका चित्रीकरण प्रो० गोविंद् अग्रवाल ने प्रभावी रूप में किया है।

इस व्यंगिका में संस्थाओं, युवकों, नारियों एवं तस्करी की समस्या पर भी इंगित किया गया है। नारी-समाज बिना दान दक्षिणा के 'पीले हाथों' की आकांक्षा सदियों से संजाये बैठा है। क्या पुराण पंथी लोग यह होने देंगे।

—कु० शर्मा

—डा० मुखर्जी

पीले हाथ



अरविंद और सरस्वती का कुछ लगाव कलकत्ता के सम्मेलन के बाद ही हो गया था। वे साथ-साथ सिनेमा भी गये थे। साथ में घनश्याम और लक्ष्मी तथा सिम्मी भी थीं।

अरविंद दिल्ली चला गया। सरस्वती, लक्ष्मी, घनश्याम कलकत्ता रह गए एवं सिम्मी अपने मां बाप के साथ जयपुर।

दिल्ली जाने के बाद अरविन्द को कलकत्ता की यादें कचोटती रहीं। उसने सरस्वती एवं लक्ष्मी तथा सिम्मी से वादा किया था कि वह पत्र लिखेगा। सबसे पहले सरस्वती को पत्र लिखा।

सुश्री सरस्वतीजी,

दिल्ली आने के बाद कलकत्ता के वातावरण की कचोकें टीसती रहीं। एक अच्छा साथ था एवं दिमागी खूराक भी मिल

रही थी। आप लोगों से विदा लेने का गम बराबर बना रहा। वैसे लेखक होने के नाते सभी तरह के पुरुष महिलाओं से संपर्क बना रहता है पर कलकत्ता वा विशेषतः आपके व्यक्तित्व और सादगी का प्रभाव अभी तक मन पर अंकित है। २ जनवरी की मुलाकात एवं सभा अभी तक दिमाग में कौंध रही है। आपकी सभी सहेलियाँ, सदस्यायें अच्छी कार्यकर्त्रियाँ है पर आपका प्रभाव आजके समाज सुधार युग में अपना एक स्थान रखता है, कम से कम मेरे व्यक्तिगत विचार में। सम्मेलन के प्रस्ताव साहित्य एवं प्रचार सामग्री का मैं इन्तजार कर रहा हूँ। मेरे मित्र का एक पत्र है उसमें प्रकाशित करवाने की इच्छा है। पत्रोत्तर दें। शेष फिर—

—अरविन्द

फिर लक्ष्मी को—

सुश्री लक्ष्मीजी,

आपके पिताजी के विचारों के अनुकूल आप सामाजिक कार्यों में भाग लेती हैं यह बहुत शुभ लक्षण है। समाज के प्रतिष्ठित घरानों की नारियां अगर अच्छे कार्यों में निकल पड़ेगी तो समाज का अवश्य कल्याण होगा। २ जनवरी को जो सभा हुई उसमें एवं अधिवेशन में काफी कुछ सुनने को मिला। पत्रोत्तर दें।

—अरविंद

डॉ० कुमारी शर्मा,

२ जनवरी की मुलाकात की याद ताजा बनी हुई है। आप जैसी पढ़ी-लिखी आधुनिक महिलाओं को सामाजिक कार्यों में हाथ बटाकर समाज के पीड़ित लोगों के कल्याण की भागीदार बनना चाहिए। आपके डैडी मम्मी प्रसन्न होंगे।

पत्रोत्तर दें।

—अरविंद

पत्र पढ़कर सरस्वती के सामने विगत घटनाएँ चलचित्र की तरह घूम गईं।

× × ×

घनश्याम समाज -सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में प्रधान अतिथि था। अरविंद प्रधान वक्ता। अध्यक्ष सेठ सोहनलाल।

अध्यक्ष ने संस्था के कार्यकलापों के विषय में बताया एवं लोगों से अभ्यर्थना की कि वे समय की गति को पहचानें एवं 'अपने' समाज की भावमूर्ति एवं छवि को उज्ज्वल बनाने के कार्यक्रम अपनाएँ। मुख्य वक्ता एवं प्रसिद्ध लेखक अरविंद कुमार चोपड़ा को अपना वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया।

अरविंद ने सामाजिक चित्रण करते हुए कहा—"हम भारत जैसे विशाल एवं सांस्कृतिक देश में रहकर संकीर्णता की बात कर नहीं सकते। निश्चित रूप से हम प्रथम भारतीय हैं तब अन्य जाति और प्रान्त के।" " " " " "हम भारतीय समाज को सर्वोत्तम समाज मानते हैं। वह हमारी हेड आफिस है। अन्य समाज उसकी शाखाएँ। इस परिप्रेक्ष्य में हमें सारा कार्य-विस्तार देखना है।"

"जो भी हो इसकी इकाई के रूप में अपना यह समाज सम्मेलन है। उसकी उन्नति के बिना भी भारतीय समाज अधूरा है। अतः हम इसको उन्नति देखकर ही वृहत्तर भारतीय समाज के चरमोत्कर्ष की कामना मन में संजोये बैठे हैं।

× × × ×

समाज में कुरीतियों एवं रूढ़ियों का जाल फैला है। कुछ कुरीतियाँ हटीं तो नई उनके स्थान पर आ गईं। पर्दा आदि हटे, तो वैवाहिक अवसरों पर नये नये खर्चे एवं दिखावा बढ़ गया है। दहेज कानून १९६१ में बना, पर दहेज तो सुरसा की तरह बढ़ रहा है। समाज की स्वस्थ परंपराएँ खत्म होकर अवैज्ञानिक, अधार्मिक, भौंडी प्रवृत्तियाँ इसमें घर करने लगी हैं। शंकराचार्यजी एवं जैनमुनि भी दहेज एवं दिखावे को समाज

के लिए घातक मानते हैं फिर क्यों समाज का साधारण पीड़ित व्यक्ति दिखावे की होड़ में फँस रहा है। यह कीचड़ उसे ही नष्ट कर देगा।"

"धार्मिक विधि-विधान अगर सस्ते हैं तो ग्राह्य है अन्यथा देश की अर्थ-रचना मंहगे विधानों की इजाजत नहीं देती। यह जीवन मरण का प्रश्न है।

हरियाणा, प० बंगाल, उड़ीसा, पंजाब एवं बिहार ने कानून बनाये हैं। सभी जातीय संस्थाएं इसके खिलाफ प्रस्ताव पास कर रही है पर यह दानव मौजूद है, क्यों ?

मेरे साधारण और लम्बे अध्ययन की बात कहूं तो यह कि दहेज भी पैसे की ललक का फल है। यह देश व्यापी भ्रष्टाचर—आर्थिक; राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में—का परिणाम है।

आज एक नेता जहाँ साधारण त्याग नहीं कर सकता, (गाधीवाद तो दूर), किस मुँह से वह अनुशासन एवं सुधार की बात करता है। बड़े-बड़े सामाजिक कार्यकर्ता ? कुछ वर्ष पहले तक 'दहेज' को पिच्छल बताते थे आज मानने तो लगे है कि दहेज कोई चीज है और खराब है। दहेज और ठहराव भारत के गरीब लोगों की लग्जरी है, एय्याशी है। इसके साथ दिखावे एवं फिजूलखर्ची को भी दूर करना है। २० सूत्री कार्यक्रम को भी मदद करनी है।

पुराने समाज सुधारक आज बिलों में घुस गये हैं। क्या समाज सुधार की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी ? अन्यथा उन्हें भी नवयुवकों को परामर्श देने के लिए निरंतर सभाओं में आना चाहिए।

यह कहते हुए हमें दुःख होता है कि यह राजनीतिक प्रक्रिया नहीं है अतः सरकार इसे नहीं कर सकती। आज प्रगतिवादी व साम्यवादी भी इसके शिकार है। पिछले दिनों पत्रिकाओं में यह रहस्योद्‌घाटन किया गया था कि साम्यवादियों के कितने खर्चे हैं एवं एक भोज में प्रतिव्यक्ति १५ रु० खर्च आता है। यह 'मधुर प्रिय' प्रवृत्ति समाज को ले डूबेगी, ले डूब रही है। इसके साथ ही समाज में सही शिक्षा का प्रचार हो। शिक्षा मंहगी भी न हो। बड़े बड़े एम० पी० भी मंहगी शिक्षा को समर्थन देते है। यह भी भ्रष्टचार का एक नमूना है। साधारण आदमी इतनी फीस नहीं दे सकता। गांधीजी क्यों लंगोटी बांधते थे। उन्हीं के अनुयायी बनने का दम भरने वाले राजनीतिज्ञ एवं व्यापारी भी धड़ल्ले से हजारों रुपये महीना स्वाहा करते हैं। समाज एवं समाज के अंगों को इससे उबारा जाय। सरकार छापे मारती है—आपकी बेइज्जती होती है। क्या लाभ है इससे ?

सरकारी अफसर—यहाँ तक कि सत्तारूढ़ दल के सदस्य भी पकड़े जा रहे हैं। पता नहीं गिरफ्तार होने में क्या मजा है।

आज तो लोग स्वाधीनता सेनानी हो गये है पर गलत कार्यों के लिए। इस स्थिति को बदलना होगा। अन्यथा आप और मैं विनाश के कगार पर खड़े हैं—इन्तजार कीजिए कब ज्वालामुखी का विस्फोट हो।

महिलाओं की शिक्षा एवं सामानाधिकार के लिए प्रयास किये जायें। पर ध्यान रहे उन्हें सम्मान के बजाय अधिक अधिकार न मिल जायें। वे अभिनेत्रियाँ बन-बन न घूमने लगें। अन्यथा यह चरमोत्कर्ष के बजाय अपकर्ष होगा। नवयुवकों का भी पथ-प्रदर्शन करना चाहिए—होटल एवं कैबरे की तरफ नहीं पर एक अच्छे एवं सुशिक्षित नागरिक बनने की दिशा में। हमें राजनीति मे भी ज्यादा से ज्यादा भाग लेना चाहिए।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि श्री घनश्यामदास जैन ने सारगर्भित एवं संक्षिप्त भाषण पढ़ा।

तालियो की गड़गड़ाहट से आकाश गूँज उठा। अधिवेशन में महिलायें भी पर्याप्त संख्या में थी। हॉल की कुर्सियाँ भी ठसाठस भरी थीं, संवाददाताओं की पेंसिलें दौड़ रही थी एवं कैमरे क्लिक कर रहे थे।

दूसरे दिन महिला सम्मेलन था उसमें भी घिसी-पिटी बातों के अलावा कई नए मुद्दे सामने आये।

भूतपूर्व महारानी मुख्य अतिथि, श्रीमती सरोज कुमारी, राज्यपाल की पत्नी मुख्य वक्ता एवं कुमारी सरस्वती एम० ए० अध्यक्षा थीं। कुमारी लक्ष्मी यद्यपि हायर सेकेण्ड्री पास थी पर समाजिक कामों में रुचि थी। सिम्मी भी आई थी। इस महिला सम्मेलन में पुरुष भी दर्शक के रूप में थ—जिनमें घनश्याम एवं अरविंद भी शामिल थे।......

मुख्य वक्ता श्रीमती सरोजकुमारी ने कहा—"आपकी विषय सूचि में वहुत से विषय है पर मैं समझती हूँ कि संक्षेप में ही इन पर विचार किया जाये तो सारे विषयों से निपट सकूँगी।"

"आप लोगों का व्यापारी समाज है पर यह जानकर खुशी हुई कि आपलोगों में प्रसिद्ध लेखक एवं राजनेता भी हैं, हो सकता है संख्या कम हो। कई महिलाएँ भी उच्च शिक्षित हैं एवं बहुत सी छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही है। कल के समारोह में प्रसिद्ध लेखक श्री अरविंद कुमार ने भी योगदान किया। आज की अध्यक्षा कुमारी सरस्वती देवी, एम० ए० (मनोविज्ञान) हैं। खैर।

आज अनेक समस्यायें समाज में पैदा हो गई है। आप लोगों में पर्दा-वर्दा कुछ हटा, कुछ नहीं हटा। दिखावा और दहेज तो हद दर्जे का है। शिक्षा भी औसतन कम है। हमारे गुजराती समाज में इस तरह की कुरीतियाँ कम है। पर्दा नहीं है, विवाह शादियाँ अच्छे घरों में भी २-३ हजार रुपए में हों

जाती है। दहेज का भी ठहराव नहीं है या यों कहिए, कोई विशेष समस्या नहीं है। शिक्षा भी है। वैसे तो ऐसा कोई समाज एवं जाति नहीं जिसमें बुराइयाँ न हों। अत में आप वहिन भाइयों से अनुरोध करती हूँ कि आप लोग भी इससे प्रेरणा लें तो ठीक हो सकता है।

जैसा सुना गया है कि आपके समाज में दहेज का ठहराव असीमित है। लड़के वाले फेरे छोड़कर उठ जाते हैं। इससे निबटने का एक तरीका यह भी है कि नवयुवक आगे आयें। लड़कियां ऐसे घरों मे शादी करने से इन्कार कर दें जो दहेज का ठहराव करते हैं। लड़कों को भी दहेज की मांग नहीं करनी चाहिए। मां-बाप को समझाना चाहिए। नवयुवकों को दहेज न लेने की प्रतिज्ञा हजारों की संख्या में करनी चाहिए। इस तरह हम स्वस्थ समाज की कल्पना कर उसको नींव के भागीदार बन सकते हैं। धन्यवाद।"

महारानी जी ने मुख्य अतिथि पद से अच्छा-सा भाषण दिया जिसमें अंग्रेजी मिली थी पर समाज से उसका कोई सरोकार नहीं था। विदेशों का वर्णन था। फिर भी तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण प्रतिध्वनित हो उठा।

तत्पश्चात् अध्यक्षा कुमारी सरस्वती एम० ए० का अध्यक्षीय भाषण हुआ जिसकी प्रतियाँ पहिले ही बांट दी जा चुकी थीं।

"हमारा समाज भारतीय समाज से अलग नहीं पर कोई भी अंग अस्वस्थ रहकर काम नहीं कर सकता अतः उसकी भी पर्वाह करनी पड़ती है। संगठन की दृष्टि से भी यह आवश्यक है—वांछनीय भी।"

"माना हमारे समाज में बहुत बुराइयाँ हैं। कुछ हट भी रही हैं और कुछ अभी पांव जमाये हैं। हमारी मुख्य कुरीति दहेज है पर इसके लिए लोग क्या कर रहे है। इसका मुख्य कारण है नारी की आर्थिक पराधीनता। वह परमुखापेक्षी बना दी गई है। सब बुराइयों का यही स्रोत है। सरकार के कानून के बावजूद भी दहेज नहीं हटा, पर समाज इसे हटा सकता है। इसके ये तीन तरीके हैं :—

१—युवक-युवतियों द्वारा प्रतिज्ञा करना कि वे न दहेज लेंगे, देंगे और न ऐसे विवाहों में शामिल होंगे।

२—जो लोग दहेज लेते देते हैं उनका सामाजिक बहिष्कार करना एवं संस्थाओं में प्रस्ताव पारित कर उन्हें भिजवाना एवं प्रचार करना।

३—नारी की आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा मे कदम उठाना।
यह बहुत अहं विषय है जिसको बड़े-बड़े सामाजिक नेता भी पूरा नहीं कर पा रहे है।"

सब विषयों पर प्रस्ताव रखे गये एव उपस्थित बहन भाइयों से निवेदन किया गया कि वे हाथ उठाकर समर्थन करे। जिन्होंने समर्थन दिया उनका नाम एक कार्यकर्ता द्वारा लिख लिया गया।

नारी की आर्थिक स्वतंत्रता विषयक प्रस्ताव पर सब महिलाओं ने तो जरूर हाथ उठाए पर पुरुष वर्ग में से दो हाथ उठे थे। एक सुप्रसिद्ध लेखक अरविंद कुमार का और दूसरा एक विद्यार्थी का।

इस पर अध्यक्षा ने टिप्पणी की कि इससे अन्दाज लगाया जा सकता है कि पुरुष नारी को स्वतंत्रता देने के पक्ष में नहीं है। इस स्थिति को बदलना होगा।

आगे उन्होंने कहा कि हमारा समाज अवश्य पिछड़ा है। पर गुजराती या अन्य समाज भी अवश्य किसी न किसी बिमारी से ग्रसित है। उस समाज में भी नारी को आर्थिक स्वतंत्रता पूरी नहीं है। वहां भी जाति के बंधन हैं। गुजराती बहनों के वैवाहिक संबंध दिखने में मधुर हैं पर वहा भी कटुता है। उस समाज में आत्म हत्यायें पर्याप्त होती है। इससे पता लगता है

स्वतंत्रता में कहीं व्यवधान है। जयहिंद।

दूसरे दिन सब में तो नहीं पर आधे अखबारों में सम्मेलन की चर्चा हुई।

हिंदी के अखबारों ने लिखा-समाज मे चेतना-नारी की स्वतंत्रता के समर्थक योग्य लेखक अरविंद कुमार की स्पष्टोक्ति—कुमारी सरस्वती देवी का सफल नेतृत्व। अंग्रेजी वालों ने दो चार लाइनों में ही काम चला दिया।

एक बंगला पत्र ने लिखा-व्यापारी लोग भी वरपन (दहेज) प्रथा में उतरे है (वोवसायीरा वरपने नेमेछे।)

रास्ते चलते ठेला-रिक्सा वालों को कुछ पता लगा, एक बोला—'का भइल भा ? दूसरा—ई सेठ लोग का खाये पीये का सामान महँगा कर दइल है।'

बंगाली लोग—मेड़ोरा की आन्दोलन वा सुधार कोरबे, आमरा क्रातिकारी होये ई कीछु कोरते परलूम ना। आमार दीदी र वियेते वरेर बावा कूड़ी हजार टाका वरपन चाइचे। धुत… …वरपन चोलछे……चोलवे।……फिर एक दिन चाय पार्टी में कई लोग शामिल हुये। अरविंद, घनश्याम, विधान चन्द्र, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, उसकी लड़की सिम्मी एवं अन्य सामाजिक नेता, कार्यकर्ता भी।

परिचय कराया गया। फिर कुछ चर्चा हुई। प्रश्न यह

सामने था कि आगे कैसे सामाजिक कार्यों को बढ़ावा दिया जाये। सबने अपने सुझाव रखे। फिर जिन जिनके विवाह योग्य लड़के लड़कियां थीं उनके नाम पते लिये गये एवं अन्य जरूरी तफसील भी।

वहाँ भी पार्वती ने सुझाव दिया कि विधवाओं की शादी की जाये। बाल विधवाओं पर जो जुल्म होता है वह सामाजिक अन्याय है। इसका प्रतिकार करना चाहिये। उसकी लड़की सिम्मी जे प्रेम विवाह को सराहा।



सरस्वती अरविंद का उपन्यास 'जीवन' पढ़ रा थी। एक आदर्श विवाह से कथानक अग्रसर होता है। विवा में सादगी थी। दिखावा और दहेज न लेकर आदर्श उपस्थि किया गया। उपन्यास खूब बिका।.....

सरस्वती को लगा कि इस उपन्यास को जरूर साहित अकादमी या सरकार से पुरस्कार मिलेगा। इस पत्र औ उपन्यास को धरोहर समझकर वह अपने परिचित की मूर्ति क आंखों के आगे नाचते देख रही थी। वह आर्थिक स्वाधीनत के लिये तड़फड़ाने लगी। पिताजी को कहकर वह अध्यापिक होना चाहती थी (कई बार पहिले भी कह चुकी थी।) फि कलकत्ते में अगर......

गाने लगी—"माई री मैं तो गोविंदो लियो मोल।"......
वह बाजार नहीं गई। उसे झाकी आ गई......
इकहरे वदन की पूर्ण यौवना भारतीय नारी की प्रतिमा।

× × ×

लक्ष्मी के घर भी डाकिये ने आवाज लगाई। वह दस बजे खाना बनाने में मशगूल थी। पैसा होते हुये भी पिताजी कंजूस थे। झी ने पत्र लक्ष्मी दी को समर्पित किया।

प्रेषक का नाम देखकर वह मन ही मन उछल रही थी। खाना बनाना मां को सौंपकर वह अपने कमरे में चली गई एवं पत्र पढ़ने लगी। तरुणी की भावनाएं प्रशंसक चाहती हैं और प्रशंसा का पात्र भी। उसे इस साधारण पत्र में भी लगा जैसे अरविंद उसे चाहता है। साधारण रूप में हर नव जवान और नवयुवती एक दूसरे से तेजी से बाते करते हैं। जो भी हो उसके लिए यह पत्र एक संबल बन गया था। वह नहा धोकर, कपड़े बदलकर बाजार गई एवं एक सटेड पैड और कुछ लिफाफे लेआई। दिनभर वह खुशी से फूली न समाती थी। जीवन की देहलीज पर ऐसे मौके रोज रोज नहीं आते।

शाम को प्राइवेट ट्यूटर (अध्यापक) आये तो उनसे पूछने लगी—आज कहानी और उपन्यास के बारे में बतलाइये—कहानीकार एवं उपन्यासकार में क्या खाशियत होती है—अध्यापक से बात करते करते इस तरह की प्रसन्न भाव भंगिमा देखकर उसकी मां हैरान थी कि लड़की को क्या मिल गया है—

× × × ×

डा० सिम्मी शर्मा ने अरविंद के पत्र को पढ़कर रख दिया। कोई खाश प्रतिक्रिया नहीं हुई—सोचा वेचारा लेखक लिखना सीख रहा है। डाक्टरों की तरह उसे चीर फाड़ करना आता नहीं अतः इतना निडर और स्वतन्त्र नहीं बन सकता। लिखने में शर्माता है एवं बनता है। धत् बुद्धू ?

सम्माननीय अरविंदजी,

७ जनवरी का पत्र आपका मिला। ऐसा क्या है कलकत्तां एवं मेरे व्यक्तित्व में। आप इतने बड़े लेखक होकर नाहक प्रशंसा कर रहे हैं। पिताजी आपके बारे में पूछ रहे थे।

आप कलकत्ता आयें तो हमारे यहाँ ठहरिए। आपके मित्र घनश्यामजी पिताजी के पीछे पड़े हैं। भगवान जाने……

पत्रोत्तर दें।

—सरस्वती

× × ×

आदरणीय श्री अरविंद कुमार,

कलकत्ता में सामाजिक कार्य भी व्यावसायिक है। यहाँ रुपया भी अठन्नी में चलता है—ऐसा लोगों का खयाल है।

व्यस्त जीवन में विशेष कुछ करना सम्भव नहीं। मुझे एनीमिया (खून कमी) के कारण इन्जेक्शन लेने पड़ेगें।।

आप प्रसन्न होंगे। पत्रोत्तर दें।

—लक्ष्मी

(अंग्रेजी में पत्र)

मेरे प्रिय अरविन्द,

आपका पत्र प्राप्त हुआ। डैडी मम्मी ने भी इसे पढ़ा—वे बहुत खुश हुये। मेरी राय है कि आपको पत्र लिखना नहीं आता (बुरा न मानें।) युवक युवतियों के पत्र तो ऐसे हों कि आसमान-चांद-सितारों से बातें करें।

मेरा मतलब इस समाज-कल्याण में क्या रखा है। कोई चटपटी बातें हों तो पत्र पढ़ने में अच्छा लगे। जवाब भी देने में आनन्द आये। आप नीरस साहित्यकार मत बनिये। लिखिये, सेवा भी कीजिये पर मन मारकर नहीं।

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं (अंग्रेजी कहावत का आशय)

पत्र दें।

—सिम्मी

तीनों पत्र पढ़कर अरविंद के दिमाग में एक अजीब कसमकस चल रही थी। अन्तर्द्वन्द्व दुखदायी था। वह मन चाहा करने और पकड़ने में असमर्थ नजर आ रहा था।

लक्ष्मी, और सिम्मी की उसे पर्वाह नहीं पर सरस्वती के मौन प्रणय में वह अनायास गिरफ्त हो गया था। असमर्थ लेखक करही क्या सकता था। पर उसका छिपा भय दिमाग में मंडरा रहा था। घनश्याम जैन क्यों बीच में टपक पड़ा है। वह सरस्वती के आसपास ही कलकत्ते में रहता है (सरस्वती जकरिया स्ट्रीट में तो वह गणेशचन्द्र एवेन्यू मे रहता है) घनश्याम सामाजिक सभाओं में उससे जरूर मिलता होगा। सरस्वती के पिताजी से परिचय बढ़ा रहा है। अनजाने भय से वह सिहर उठा। फिर सरस्वती भी उसे पसन्द नहीं करती। पत्र की भावना से तो ऐसा ही प्रतीत होता है।

× × ×

अरविंद दोपहर का खाना खा चुका। उसकी माँ और उसका छोटा भाई प्रेम अपने कमरे में जाकर आराम कर रहे थे। आज का दिन उसे बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण एवं उत्पीड़क मालूम हुआ। उसके पिता जी ने बहुत कष्ट झेले एवं परिवार को भी उन कष्टों का भागीदार होना पड़ा पर वह पढ़ लिख कर कमाने वाला हो गया। लेखन की दिशा में उम्र के अनुकूल शोहरत पा रहा है। पर समय इतना दुखदायी उसे कभी नहीं लगा। उसे लगा कि नारी ही नहीं पुरुष भी कितना असहाय है।

चलचित्र की तरह उसका बचपन, कैशोय उसके दिमाग में प्रतिबिम्बित होता गया। कल्पना की दुर्गम घाटियों को पार कर वह अनंत में जा रहा था। वैभव की अट्टालिकाओं को पार कर, सामंती-साम्राज्यवादी किलों को लांघता हुआ, अजेय हिमाद्रि के भी ऊपर देव और यक्षों से बातें करता करता दानव नगरी मे पहुँच गया। यही है ····मैं स्वयं नीचे गिर गया हूँ। गरूड़ पुराण का वर्णन उसके मन की आँखों से दीख रहा था। किस तरह के अजीब डरावने जानवर और दानव। धार्मिक रूप में नर्क को न माने पर दुर्वों का विशेषण नर्क उसके सामने था। यमराज के राज्य जसी स्थिति सामने थी। वह नर्क में विश्वास करने लगा। उसका पाखंड विरोधी मन टूट रहा था। वह दृढ़ निश्चयी न रह सका।

राज ग्यारह बजे तक ऐसे ही रहा जब तक कि उसकी मां ने जगाया नहीं। हाथ मूँह धोकर खाने का प्रयास किया पर एक दो ग्रास में अलावा भोजन गले से उतरा नहीं। 'तबियत खराब है' का बहाना बनाकर वह फिर लेट गया।

दूसरे दिन से वह सरस्वती को पत्र पर पत्र लिखता गया। अल्लू-जल्लूल बातें एवं अनबूझ पहेली की तरह।

न जाने उसको सरस्वती में क्या दिखाइ दिया। हो सकता है उसकी शिक्षा, शालीनता और मध्यम शरीर सौष्ठव।

सुश्री सरस्वतीजी,

आपका १५ जनवरी का पत्र मिला। मेरी समझ मे नही आया कि घनश्याम क्यों आपके पिताजी के पीछे पड़ा है। भगवान के लिए आप कोई दृढ़ कदम नहीं उठा सकतीं? मेरे हाल के विषय में कुछ नहीं कह सकता पर मैं आपके स्पष्ट-भावी पत्र की प्रतीक्षा करूंगा… …

पत्रोत्तर शीघ्र दें।

—अरविन्द

दूसरे ही दिन फिर—

सुश्री सरस्वतीजी,

मैं आपके पिताजी को भी एक पत्र लिख रहा हूँ एवं कलकत्ता आने का प्रयास कर रहूँ।

—अरविन्द

सम्मानीय अरविन्दजी,

आपके दोनों पत्र दि० २० और २१ जनवरी के प्राप्त किये। कुछ समझ में नहीं आता क्या होगा। आप ही कोई उपाय

बताइये। पिताजी का जवाब मिला क्या? कलकत्ता कब आ रहे हैं?

पत्रोत्तर शीघ्र दीजिए।

—सरस्वती

प्रिय सरस्वतीजी,

आपका दि० २७ जनवरी का पत्र मिला। आपके पिताजी का कोई उत्तर नहीं मिला। शायद वे घनश्याम की तरफ झुक गये हो। घनश्याम अच्छा व्यापारी है।""—मैं आपका स्पष्ट उत्तर चाहता हूँ। फिर देखा जायेगा कौन क्या करता है""।

—अरविन्द

प्रिय अरविन्दजी,

आपका १ फरवरी का पत्र मिला। पिताजी व्यवसाय के काम से बाहर गये हैं। मैं घनश्यामजी से मिली। पता लगा कि पिताजी अन्तर्जातीय विवाह करने के लिए तैयार नहीं। इससे ज्यादा क्या लिखूँ""

—सरस्वती

प्रिय सरस्वतीजी,

८ फरवरी का पत्र मिला। आपके पिताजी तो पुराण पंथी है ही और आप भी दब्बू और सनातनी विचारों की हैं। स्पष्ट लिखते भी शर्म आती है क्या ?

—अरविन्द

× × ×

मई में घनश्याम और सरस्वती की शादी कलकत्ता में हो गई। शुभ विवाह का कार्ड अरविन्द को भी भेजा गया पर वह बीमारी का बहाना बना कर रह गया।

उधर लक्ष्मी और डा० सिम्मी के पत्र आ रहे थे। अरविन्द का मन बोझिल हो उठा था। एक नवयुवक कलाकार की असहाय स्थिति। बहुत दिनों तक उसने किसी पत्र का जवाब नहीं दिया। लक्ष्मी प्रेमिका के रूप मे लिखती रही। सिम्मी फ्लर्ट करती रही।

हल्दीघाटी के मैदान में वह हार चुका था पर फिर से सम्बन्ध तो जुटाना ही होगा। मानव जीवन एक पहेली है। यहाँ आदमी जो मांगता है वह नहीं मिलता। चार सौ वर्ष पहले का इतिहास और युद्ध बिजली की तरह कौंध गया।

राणा हारने के बाद साधन जुटाने की चेष्टा में थे। जंगलों और घाटियो में घूमते रहे। अन्त में सैनिकों की सहायता से फिर लड़ने पर आजाद हुए। भामाशाह ने अपनी धन-दौलत राणा के पांवों में समर्पित कर दी। राणा में नये उत्साह का संचार हुआ पर आज एक धनी ने उसकी सीता को छीन लिया। वह रावण बन गया। अरविंद इसी उधेड़ बुन में दिन रात पड़ा रहता। सिवाय साधारण खाने-पीने के और काम छोड़ दिए। \

अचानक फिर एक पत्र लक्ष्मी का मिला।

आदरणीय श्री अरविंद कुमार,

डा० मुझे कैंसर बता रहा है। इलाज चल रहा है। आपकी तबियत ठीक होगी। आपका पत्र दो महीने नहीं आया। मुझे बड़ा बुरा लग रहा है। सरस्वतीजी आई थीं। उनकी शादी हो गई है।

पत्रोत्तर दें तो कृपा होगी।

—लक्ष्मी

उसे लगा जैसे लक्ष्मी देवी का प्रतिरूप है। शिक्षा कम होते हुए भी उसमें साहस है। वह सरस्वती की तरह धिक नहीं सकती। उसे ग्लानि हो रही थी।

पर उसका मन कह रहा था कि सरस्वती की मजबूरी अवश्य रही होगी। उसके पत्रों एवं मुलाकत से यह स्पष्ट था कि वह

समझदार एवं आदर्श लड़की है पर पिताजी के कारण कायर बन गई। यह सामाजिक अन्याय है। नारियों को जेहाद करना चाहिए एवं अपनी कीमत समाज से वसीलनी चाहिए।

कभी खयाल आता कि उसका अपना जीवन शून्य हो गया है। महत्वपूर्ण मोड़ पर वह अकेला है। समाज द्वारा प्रताड़ित है। घनश्याम जैसे दो नम्बरी समाज सुधारक आज समाज में घुन की तरह लग गए हैं। सरस्वती के पिताजी भी झूठे समाज सेवी हैं। अगर समाज के तथा कथित अगुए इस तरह सुधारों के बीच में आयेंगे तो यह समाज बचेगा कैसे। कलकत्ता के समाज सुधार का नमूना उसने देख लिया। उसके मन में क्रान्ति का शंख बज रहा था।

●

अरविंद बृजनाथ कूचे और कनाट प्लेस के बीच चक्कर लगाता रहा। बृजनाथ कूचे में उसके रिश्तेदार रहते थे।…

कुछ दिन दिल्ली रहकर वह तय कर पाया कि उसे जलवायु बदलने के लिए उदयपुर चला जाना चाहिए। उदयपुर में उसका लेखक मित्र रहता था…… रमाकान्त उपाध्याय। वह जयपुर होते हुए जाना चाहता था। तार दे दिया था अत स्टेशन पर श्री विधानचन्द्र शर्मा और उनकी लड़की सिम्मी आये। वह होटल में ठहरना चाहता था पर उन लोगों की जिद्द के कारण शर्माजी के बंगले पर ठहरा। रात का वक्त था। नहा-धकर तैयार। जुलाई महीने में वर्षा अच्छी होती है……मौसम सुहाना, पर न जाने अरविन्द को क्या कचोट रहा है। बीच-बीच मे सिम्मी बकवास करती जा रही है। वह सरस्वती और लक्ष्मी के बारे में पूछने लगी। कहने लगी सरस्वती की शादी हो गई है. आपकी कब होगी। अरविन्द को लगा जैसे वह पहाड से टकेल दिया गया हो-। उसने बात टालते हुए उदयपुर के जलवायु की बारे में बनाना शुरू कर दिया।

सिम्मी अपने पिताजी से जिद्द करने लगी कि वे लोग भी उदयपुर चलें। वकील साहब व्यस्त आदमी हैं, उन्हें अभी जाना जचा नहीं। सिम्मी ने अपनी मा को उदयपुर जाने के लिए राजी कर लिया।

कालेडा—कृष्णगोपाल (अजमेर)

दूसरे दिन सामान तयार। अरविन्द को अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि सिम्मी असंस्कृत किस्म की लड़की है एवं कभी-कभी फालतू मजाक भी कर लेती है। मां वाप ने जो वेलाग छूट दे रखी है उसी का नतीजा है कि वह वेपनाह नटखट और अल्हड़ होती जा रही है। उसका एक चाचा कलकत्ता में रहता था और उसने एक नर्तकी से शादी कर ली थी। वह भी इसी तरह आजाद 'रोमांस' और शादी करना चाहती है। अव उसके पास अरविन्द का मन लगना कठिन है।

उदयपुर का मौसम झीलों के कारण वहुत सुहावना और सुखद है। इन्हीं कल्पनाओं में खोया हुआ अरविन्द डाक वंगले गया। वहाँ एक चार सीटर वड़ा कमरा बुक करवाया। चाय नाश्ते के वाद खाने का आर्डर दिया। पता चला आज कल सिम्मी नोन-वेजिटेरियन (अशाकाहारी) भोजन भी करने लगी है। उसकी मां कहने लगी कि उसके पिताजी तो प्याज भी नहीं खाते थे। यह मुई नई पीढ़ी न जाने क्या करेगी। वैसे उसकी मां विचारों में आधुनिक थी या यों कहिए परिस्थितियों ने ऐसा वना लिया था। जयपुर में भी एक दिन में सिम्मी के मित्र परिचितों का हाल देखकर अरविन्द भांप गया था कि लेडी डाक्टर वड़े-वड़े आपरेशन करने लगी है। वह पाश्चात्य समाज से भी वदतर जिन्दगी जी रही। कैवरा, सिनेमा, डिस्कोथेक आदि का शौक चर्राया है। चरस, गांजा भी चलने लगा है।

दिनभर उदयपुर का चक्कर लगाया। टैक्सी का ठेका कर

लिया गया था। राजसमद, काल महल, एव बाग बगीचों का परिदर्शन किया गया। कठ पुतली खेल भी देखा। २० मील दूर सास बहू के मन्दिर (नागदा) गए।

इसमे शक नहीं कि उदयपुर दर्शनीय एव रमणीय स्थान है। इसके प्राकृतिक अंचलों मे कितने ही दृश्य फिलमाए गये हैं। "गाइड" और "मेरा साया" के दृश्य आज भी जनता के हृदय में सुरक्षित हैं।

जी और आँख भर कर दृश्य देखे गये। पर्यटकों की मंडिलिया घूम रही थीं। अरविन्द के पास कैमरा था—फोटो लिये गये। चौवीस चित्रों में से बारह तो अरविन्द के साथ सिम्मी और उसकी मां के ही लिए गये (टंक्सी वाले ने फोटो उतारे)।

रात को खाना खाकर सब थक कर सो गये। रात में एक बजे करीब सिम्मी उठी। पूरे डाक बंगले में सन्नाटा था। वह खींचकर अरविन्द को बरामदे में ले गई एवं अपनी हवस का शिकार उसे बनाने लगी। 'डीयर, बोलते क्यों नहीं" उस एग्रेसन (आक्रमण) में वह भी हार गया। कई घाटियाँ इस तरह अचानक उपस्थित हो जाती हैं।

इस प्रकार उदयपुर में वर्षा के तीन दिन व्यतीत हो गए। लेखक की हैसियत से अरविन्द को महिला मंडल की सदस्याओं ने आमंत्रित किया। कलकत्ते के समाज सम्मेलन के अधिवेशन की चर्चा थी। इस कारण भी समाजसुधार में रुचि रखने वाले लेखक को जुबानी सुनने के लिए अब युवतियां लालायित थीं। विषय

था—"आज के समाज में महिलाओं का दायित्व"। इस विषय को इसलिए रखा गया क्योंकि आज समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में महिलाओं की पहल की आवश्यकता है। उनके अवदान के विना इलाज सम्भव नहीं है।

गोष्ठी में प्रश्नोत्तर के रूप में चर्चा हुई। इस दौरान जो निष्कर्ष निकला और मुद्दे उभर कर आये वे संक्षेप मे ये हैं—महिलाओं को आज आधुनिकता के नाम पर फ्लर्ट नहीं करना है। उनकी छवि तभी वन सकती है जब वे दो मोर्चों पर लड़ें : एक पुराण पंथी विश्वासों का मोह छोड़ें, अच्छी वातों को ग्रहण करें। दो, दिखावा और फैशन छोड़े।

भोगमय जीवन से उसका सम्मान नहीं वढ़ता।

साथ मे डा० सिम्मी भी थीं। रह रहकर अरविंद को चेतावी और मनोवृति याद आ रही थी।

उसे यह भी याद था कि कलकत्ता में जव सरस्वती और लक्ष्मी से मुलाकात हुई थी तो वे कितनी संयत और शालीन प्रकृति की थीं। सरस्वती हो सकता है पिताजी के सामने दब्बू हो पर वह संयत और एक इज्जत पसंद व्यक्तित्व है, इसमें शक नहीं। बेचारी लक्ष्मी की शिक्षा की अपूर्णता उसका दोष नहीं। आज वह पीड़ित है। पता नहीं ·····

× × × ×

सरस्वती भी उस वातावरण में खुश नहीं थी। धन ही जीवन का चरम उद्देश्य नहीं है। जव मन भरता न हो और अधूरा

हो, तन की भी क्या गारंटी है, तो धन क्या करें। धन खाया नहीं जाता। भोगा जा सकता है पर वह भी तन के रूप में नहीं। बीमार, आवेगी, भावुक, आदमी को और भी कुछ चाहिए।

भारत के ऋषि-मुनियों, यहाँ तक कि विदेशी दार्शनिकों ने भी धन को मन से नीचे दर्जे का ही दिया है।

"स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते।"

सरस्वती कई महीने से ससुराल नहीं गई थी और जब वहां थी तब भी पलंग के नीचे सोती थी। घनश्याम रात में देर से आता था, उसका होटल जीवन, 'डिस्कोथेक'। कई महीने तक सरस्वती ने इस विषय में किसी को बताया नहीं। मां-बाप को घनश्याम चकमा दे देता था। समाज-सेवा उसका मुखौटा था—उसी की आड़ में यह क्या हो रहा था। वह एक अस्प-ताल की नर्सों का रात में मुआयना करता था। बालदिवस (नेहरू दिवस) के आसपास कुछ कुंवारी लड़कियों समाज सेवि-काओं से डेट निर्धारित की जाती थीं। सामाजिक-आर्थिक शोषण का प्रतीक बन गया था वह। कारखाने की मजदूर औरतें, ओवर टाइम और झूठे कार्यक्रम। अंग्रेजों के बाद एक नया वर्ग पैदा हुआ है जो उनसे भी बहुत बदतर है। वह दिन में गंगा जल पीता है और रात मे लाल परी—अंगूर की बेटी। उसको सप्लाई करने वाले कुछ दलाल हैं जो तथा कथित सांस्कृ-तिक कार्यक्रम करते रहते हैं।

सरस्वती इस परिस्थिति को भांपकर सिहर जाती थी। पूरी बातें उसे मालूम भी न थीं। शादी के दूसरे ही दिन अगर घनश्याम के मुँह से मद की गंध न आती तो वह इतना भी जानने की स्थिति मे नहीं थी।

वह सोचती थी कि सुबह पूजा-पाठ, दिन में व्यवसाय और रात में यह दोहरी जिन्दगी। उसे पता भी न था कि तथा कथित संभ्रान्त महिलायें भी इस जीवन में संगिनी हैं। (उदाहरण के लिए जयपुर की डा० सिम्मी शर्मा अपनी जगह है।)

गांधीजी के आदर्श आजादी के बाद नदी में बहा दिये गये। उनके शिष्य ही अनुरूप नहीं रहे, तो औरों की बात छोड़ दें।

नारियों पर किस तरह जुल्म ढाए जाते हैं, यातनाएँ दी जाती हैं, यह अनुसंधान का विषय है। इसमें कुछ स्वाभिमानी अडिग नारियाँ ही टिक पाती हैं अन्यथा त्रासदी की शिकार हो जाती हैं या दासी बनकर रहती हैं। प्रेमचंद ने कहा था, 'बलि के बकरे की तरह नारिया खूंटे से बंधी नजर आती हैं।'

दहेज और जाति के व्यामोह में फंसकर सरस्वती के पिता श्री कन्हैयालाल ने एक शिक्षित महिला को जानवर के पीछे बांध दिया था।

सितम्बर मे एक दिन सुहावने मौसम में बैठी सरस्वती अपनी स्थिति पर गौर कर रही थी—एक युवती ऐसे में किस कदर मायूस एवं पीड़ित थी……। अचानक महिला संस्थान की ओर से उसे निमंत्रण मिला कि उसकी एक सभा शाम को पार्क स्ट्रीट

में होगी। उसकी अध्यक्षा श्रीमती सुशीला देवी हैं जो एक संभ्रान्त कुल की वधू हैं। जी न चाहते हुए भी सरस्वती उस सभा में चली गई। सीढ़ी उतरते-उतरते उसे भय था कि कोई टोक न दे। खटखट करती वह जकरिया पार कर सेन्ट्रल एवेन्यू पर आ गई। टैक्सी पकड़ी और पार्क स्ट्रीट।

गोष्ठी में ५० व्यक्ति होंगे। अध्यक्षा श्रीमती सुशीला गुप्ता ने गोष्ठी का विषय बताया। प्रमुख वक्ता थे श्री नीरज और श्रीमती कमलेश। विषय "युवा पीढ़ी आज क्या चाहती है?"

भाषण जम गया। युवापीढ़ी आज काम करना चाहती है पर युवतियों की, युवकों की नहीं। पर्याप्त संख्या में युवक आज दिशा भ्रमित हो गये हैं। उनका होटल जीवन ही उनका सहारा है। वे आदर्शों को घोलकर पी गये हैं। इसलिए युवतियों पर बोझ पड़ रहा है और वे शोषण का शिकार हो गई हैं। सरस्वती भी बीच बीच में तालियां बजाती जाती थी। वह इत्मीनान से बैठी हुई थी कि उसकी नजर घनश्याम पर पड़ी। वह ठिठक गई। उसने सोचा कि हो सकता है आज झगड़ा हो। पर एक शिक्षित युवती को गोष्ठी में आने का बराबर का हक है। और वह कोई गलत नारी नहीं है।

जब गोष्ठी समाप्त हुई तो घनश्याम ने हुक्म दिया कि सरस्वती उसके साथ चले। जिद्द करने पर भी वह बीमारी का बहाना बनाकर एक टैक्सी में अपने नैहर जाने लगी। घनश्याम ने उसे कुछ अपशब्द कह दिये—उच्छृंखल, कुलटा।

ये शब्द, सरस्वती के मन में पैठ गये। 'शट अप' कहकर वह सीधी मायके (जकरिया स्ट्रीट) चली गई। रास्ते में उसने प्रण कर लिया था कि वह इस स्थिति से अपने आप को उबारेगी एवं समाज से कीमत वसूल करेगी। इसी अन्तंद्वद्व एवं उघेड़ बुन में उसके सामने नये नये अन्याय के चित्र और उनके इलाज उभरने गये। हजारों वर्षों का नारी इतिहास उसकी आखों के आगे नाचने लगा।

प्रताड़ना एवं लांछना के काले कारनामों से भरा पड़ा है वह। उसमें कहीं कहीं रजत रेखा है। आज जबकि एक महिला देश की प्रधानमंत्री है—ये भूखे वदचलन जानवर अपने पंजे समाज की नारियों के सतीत्व पर गड़ाये हुए हे। उनकी पत्नियां दुखी हं और शोषित प्रेमिकाएँ भी वदतर हैं। इसको वदलना होगा। न जाने किन किन अंधेरी वादियों से वह गुजरी।··· ··गार्गी, मैत्रेयी, द्रौपदी, सीता, सावित्री, हैलेन, विक्टोरिया, जोन ओफ आर्क, झांसी की रानी, दुर्गावती, इन्दिरागांधी, सीरीमावो के चित्र चलचित्र की तरह घूमते गये। उसमें आत्म-विश्वास जमा, साहस पैदा हुआ। वह शांत हुई····· ··घर जाकर सीधे अपने कमरे में जाकर लेट गई। खाने के लिए मां कहने आई। इच्छा न होते हुए भी हाथ धोए। चेहरे पर एक गीला हाथ फेरा, पोंछा और कुछ खा लिया। फिर लेट गई।·······रात में सोचा घनश्याम का फोन आ सकता है। इन्तजार किया इसलिए नहीं कि उसे अच्छा लग रहा था

पर इसलिए कि आज पक्का फैसला करना है। खरी खरी सुनानी है। मा पिताजी से भी निर्णय करना है। वह चाहती थी कि कल बात हो।······

रात में विचारों में डूब गई। कई योजनाएँ सामने आईं। आखिर तो जीवन का अह प्रश्न था।

अरविंद का विचार आना स्वाभाविक था। सिर्फ इसलिए कि उसे यह सारी परिस्थिति बता दी जाय। पिताजी का अब उसे डर नहीं था। नारी समय आने पर सिंहनी भी बन जाती है ······।

बीच बीच में उसे कला और साहित्य के विचार मथ रहे थे। जानवर और पशु पक्षी भी खाना खाते हैं, निवास करते है, सेक्स (नर मादा संबंध) होता है पर वे कुछ वर्षों बाद नष्ट हो जाते हैं। किन्तु मनुष्य चाहे तो, उसकी कृतियाँ अमर हो सकती हैं। और वे ब्रह्माड की छाती पर एक चिर स्थायी छाप छोड़ सकती हैं। कला की समालोचक न होते हुए भी वह उसमें छात्रा-जीवन से ही रुचि लेती थी। आज वह रुचि विकसित हो रही थी और जीवन-मूल्यों के आदर्श को समझाने में सहायता कर रही थी। उसे भान हो रहा था कि अगर धनवान के पास कलात्मक रुचि नहीं या चरित्र नहीं तो वह अधूरा ही नहीं चौथाया है। मध्यवर्गीय के पास अगर मन और कला है तो वह ऊँचाइयां नाप सकता है।



घनश्याम का फोन दूसरे दिन आया। सरस्वती के पिता श्री कन्हैयालाल ने चोंगा उठाया—वह आग बबूला हो रहा था। (इससे पहले सरस्वती इस बारे में मा-बाप को बता चुकी थी।) घनश्याम बोला आपकी लड़की ने बता दिया होगा कि स्थिति क्या है। वह स्वच्छंदता से घूमती है—बात भी नहीं मानती। इस तरह की मेम साहब की आजादी कैसे बर्दाश्त हो सकती है। आप समझ गये होंगे कि मुझे सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ेगा' ' '

सरस्वती के पिता बेचारे खीसें निपोरते जा रहे थे और सुनिए-सुनिए रटते जा रहे थे। घनश्याम मानता ही नहीं था। उसने फोन पटक दिया था—उसके अन्तिम शब्द थे "हमारा जेवर भिजवा दीजिए।" दूसरे दिन श्री कन्हैयालाल घनश्याम के पिता सेठ रामसहायमल के घर गये। खूब देर वाद-विवाद हुआ। पहले तो श्री कन्हैयालाल मिन्नतें कर रहे थे पर जब उन्होंने कहा 'हमें पता नहीं था साधारण परिवार की लड़कियां जरूरत से ज्यादा आजाद होती हैं। अगर होता तो हम यह सम्बन्ध स्वीकार ही नहीं करते।'

श्री कन्हैयालाल ने वहीं जवाब दे दिया 'जैसा उचित समझें करें। शिक्षित लड़कियों को हम खरीद नहीं सकते न उनका शोषण कर सकते हैं। अच्छा नमस्ते।'

सम्बन्ध-विच्छेद को लेकर घर में कोहराम मच गया था—सरस्वती की मां डरी हुई थी। उसने कितने प्रसाद व्रत बोले थे, पर अब क्या हो सकता है। (इन पुराण पंथी महिलाओं को वजह से भी बहुत से लड़के वालों का सिर आसमान पर चढ़ जाता है।)

कुछ दिनों बाद श्री घनश्यामलाल के टेलीफोन की घंटी बजी-घर्रर घर्र····', दोपहर का समय था, सरस्वती की मा सो रही थी, घर मे पिताजी नहीं थे। सरस्वती का मन अजाने भय मिश्रित क्रोध से भर गया। फिर भी उसने चोंगा उठाया। वह निर्निमेष, निस्तब्ध उसे पकड़े रही।

घनश्याम हलो, हलो' कर रहा था। अन्त में सरस्वती ने होठ खोले "पिताजी घर में नहीं है।······और आइन्दा फोन करने कोई जरूरत······तन हीं······।"

सुनो सरस्व · ती······ई ई ···। भूल आदमी से होती है। क्या अंगुलियों से नाखून परे होते हैं। मुझे तुम जैसी दृढ़ प्रतिज्ञ नारी के सामने झुकना पड़ा···।

मैं स्वीकार (करता हूं) कि मैं गलती (?) पर था।

सरस्वती ने कहा—काहे की गलती। चोंगा स्टैंड पर पटक दिया।

× × × ×

घनश्याम एक चाल से दूसरी चाल में डेरा बदलता फिरा। वह डर गया था कि अब उसे पुलिस छोड़ने वाली नहीं है।

कभी जुहू, कभी चौपाटी के मित्रों के फ्लैटों मे रहता। कभी होटल में। फव्वारे से अपोलो स्ट्रीट जाते समय वह किसी पुलिस मैन को देखता तो उसका हृदय धक् से रह जाता। उसे जाना पड़ता, लाचारी थी। अधिक पैसा पास में रख नहीं सकता था। मौके बे-मौके दोस्तों से उधार लेना पड़ता।

उसका मन ऊब गया था, वह चिड़ावा (राजस्थान) चला गया। वहां टूटे-फूटे मकानों में रहते-रहते उसने महीनों गुजार दिए। वहा उसे सिम्मी और गीतेश जाकर मिले। गीतेश दो दिन वाद लौट गया क्योंकि सेठों और राजनीतिज्ञों को भूखी निर्धनता की सप्लाई चल रही थीं। उसे अपनी स्मारिका के लिए धनवानों के लड़कों एवं मनचले राजनीतिज्ञों से विज्ञापन लेना था। काशीप्रसाद, रामचन्द्र उसके विशिष्ट सहयोगी थे। दोनों नारी हृदय को परखते थे। दोनों सभा-संस्थाओं के माध्यम से पहले इज्जत वाले वने, अव इज्जत लूट रहे थे।

अखवारों में भी इस भ्रष्ट चंडाल चौकड़ी के काले कारनामे जनता तक पहुँचाये जाते थे। कलकत्ता का सामाजिक जीवन पहले कालेवाजारियों और अव इन तस्करों और सप्लाई एजेंटों के कारण विपाक्त हो गया था।

कलियुग तो है ही फिर भी समय आने पर इस तरह के कुकृत्यों को कानून वर्दाश्त नहीं करती। अगर वे कानून से वच जाते हैं तो समाज और कार्यकर्ताओं की टोली समाधान निकालेगी।

अरविन्द को कलकत्ता के एक आदर्श स्कूल का ओफर मिला। पिछली वार कलकत्ता में था तब नव शिक्षालय के मानद सचिव श्री नाहटा ने उसका पता नोट किया था। आठ सौ रुपये पर प्रधानाध्यापक का पद कोई बुरा नहीं था। फिर अपना काम तो करेगा ही।

समाज-सुधारक श्री नाहटा एलगिन रोड मे एक बालकों का बड़ा स्कूल चला रहे है, जिसको आदर्श बनाने की उनकी इच्छा है। अरविन्द को मालूम है कि सचिव अन्दर से पक्के व्यवसायी हैं पर उसे तो अपना काम करना है, उसके साथ व्यवसाय थोड़े ही करना है। स्कूल की कार्यकारिणी के सदस्य एवं अध्यापक चिंतकों का मुखौटा लगाये हुए हैं। दिमागी स्तर और रुचि के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। बहुत से लड़के छात्रावास में रहते है, कुछ डे-स्कोलर भी है। स्कूल की जमीन बहुत बड़ी है। अन्य 'होबी' का क्षेत्र भी है। खेलकूद, व्यायाम, कला, एवं वादविवाद के लिए अलग विभाग है—संतरणी है, सिनेमा है। दुविधा और असमंजस का मारा वह विचार मग्न ही रहा, पर दूसरे दिन उसे यह मंजूर हो गया।

उसे बराबर अपने एक मित्र रामलाल की याद आई थी जो अब बाहर है। वह उसे अच्छी राय देता था एवं उसके जी

का बोझ हल्का करने में माहिर था। उसे याद आ रही थी सरस्वती की। इधर पत्राचार कम हो गया था। सकोच हो रहा था। पत्रों में घनश्याम के विपय में पढ़ा था पर उसे पक्का यकीन नहीं था कि यह वही घनश्याम है। उसने पत्र लिखने का निर्णय लिया।

प्रिय सरस,

इतने दिन तुमने पत्र नहीं दिया, न मैंने ही। लक्ष्मी कैसी है? घनश्याम कहां है? तुमने पहले लिखा था कि तुम्हारी और उसकी बनती नहीं है एवं स्थिति नाज़ुक है। स्पष्टतः लिखना। मैं नव शिक्षालय में प्रधानाध्यापक होकर आ रहा हूँ, तब मुलाकात होगी।

—अरविन्द

सरस्वती लड़कियों के साथ बाहर चली गई थी। एक मास लगेगा।

× × ×

अरविंद कलकत्ता आ गया था। तार देने पर भी सरस्वती स्टेशन पर नहीं आई। स्कूल जाकर फोन करने पर पता लगा कि वह बाहर गई है।

घनश्याम को फोन किया तो ऊसके पिताजी रोना रो रहे थे। सरकार तबाह कर रही है। व्यापारियों को काम करने नहीं देती घनश्याम पता नहीं कहाँ है? अरविंद बीते दिनों की याद में विचारमग्न होकर स्थिर बैठा था। थोड़ी देर में

कुछ अध्यापक आये तो उसका स्वप्न टूटा। औपचारिकता के नाते उसे सब करना पड़ता था। सुबह नहा धोकर स्कूल जाना, आकर भोजन करना, पढ़ना, मनोरंजन, खेल-कूद। पर वह उदास नजर आ रहा था।

× × × ×

दार्जिलिंग में सरस्वती और अध्यापिकाएं तथा छात्राएं पर्यटन एवं हवा खोरी के उद्देश्य से गई थीं—पर सरस्वती का मन उचाट हो गया। वह दिनभर सोचती रहती कि जीवन एक ऐसे मोड़ पर है, जहाँ से जरा-सा गलत कदम दार्जिलिंग के पहाड़ों की तरह जीवन को सैकड़ों फुट नीचे ले जा सकता है।

शैलावास विश्रामगृह में प्रातराश कर सुवह पर्यटन विभाग की डीलक्स वस में सब निकलतीं, कभी प्राइवेट वस में। घूम मठ में देव मूर्ति का दर्शन करने सबसे पहले गये। कला की दृष्टि से मठ उत्तम है। उनके नियम कायदे मानने पड़ते हैं पर विदेशी भी वहा जा सकते हैं। सरस्वती भी अपने मनोरथ को लेकर वहा मिनटों शान्त खड़ी रही—अध्यापिकाएं गाइड के साथ घूम रही थीं—विदेशी वृद्ध और युवा जोड़े प्रसन्नता से विचरण कर रहे थे। मठके ऊपर जाने पर कई तरफ से हिमालय की पर्वत मालाएँ सफेद स्फटिक दीवार की तरह चमक रही थी। प्राकृतिक पर्वतीय छटा अपने स्वर्णिम वय में थी। बादल सफेद और स्लेटी रंगों के नक्शे बना रहे थे। रजत धवल दृश्यावलियां नैसर्गिक सौन्दर्य की अप्रतिम अनुभूति करा रही

थीं। चित्र उतारे गए। बालिकाओं की फुदक, चहलकदमी बाल सुलभ सरलता स्फुरणा की द्योतक थी।

इसके बाद एक-एक करके अन्य स्थानों को देखने गए। गाइड कभी अंग्रेजी कभी हिन्दी में समझाने के स्वर में वर्णन करता जा रहा था। तत्पश्चात् वे दार्जिलिंग रेलवे स्टेशन गईं। वहां इन्जिन और छोटे-छोटे डिब्बे बच्चों की गाड़ी की तरह लग रहे थे। सोचा लौटते समय रेल से चला जाय। हर स्थान मन को बरबस आकर्षित कर रहा था। इसके बाद रेल का लूप देखा जहां पर पटरियां एक तरफ घूमती वापिस उसी स्थान के पास आ मिलती थीं। बहुत ही स्वाभाविक और मनोरंजक दृश्य था......। कैवेन्टर्स डेरीफार्म, जहां हजारों गायें और अन्य जानवर हैं, हिन्दुस्तान का एक प्रसिद्ध प्रतिष्ठान है। वहां मक्खन आदि दुग्ध का सामान वैज्ञानिक तरीके से तैयार होता है। छात्राएँ सवाल भी पूछती जाती थी। इससे उनके ज्ञान की वृद्धि होती एवं जीवन को आंखों से देखने का मौका मिलता है।

चिड़िया घर में पशुपक्षी एवं पेड़ पौधों का पालन होता है। बहुत बड़े आयतन में फैला यह जू बड़ा प्रसिद्ध है। इसमें एक कांच घर है, जिसमें पेड़ पौधों को वैज्ञानिक तरीके से सुरक्षित रखा जाता है। चीते, बाघ, हिरण, सिंह, जिराफ, गैंडा, जल हाथी, गोरैया, काकातुआ, मोर, बारहसिंघे एवं अन्य पशुपक्षी थे। बच्चे जानवरों को छेड़ते चले जा रहे थे। एक जानवर तो थूक रहा था जो १५-२० फुट तक थूक फेंक सकता था। वे

बाजार व सरकारी मकानों को लांघते चले गए। मार्केटिंग के समय छोटी टोर्च, खाने का सामान, टोफी, चोकलेट, कुछ पुराने प्रसिद्ध क्यूरियों खरीदे।

× × × ×

रात में बाजार से लौटते समय शैलावास के परकोटेनुमा स्थल पर टोर्च जलानी पड़ी। रात में ठंड सुबह की तरह ही थी। गर्म पानी दो मिनट में ठंडा हो जाता था। जल्दी हाथ मुंह धोये। खाना खा बिजली का हीटर जलाकर सब सो गईं।

कुछ सदस्याएँ तो गर्म कपड़े लाई थीं, जो नहीं लाईं उनकी हालत खस्ता थीं। वे ठिठुर रही थी। मार्च में यह हालत थी तो दिसम्बर में क्या हालत होती होगी।

दूसरे दिन चाय नाश्ता करके टाइगर हिल देखने चली गईं। सरकारी बस ऊँची-नीची ढलानों से एक मनोरम रास्ते से पार कर वहां पहुँची। वहां से सूर्योदय बडा मनोरम और लुभावना लगता है उसे ही देखने दुनिया भर के सैलानी भी दार्जिलिंग आते है। इसी के कारण दार्जिलिंग को हिल स्टेशनों की रानी कहा जाता है। लोग एक तल्ले पर जाकर अपनी-अपनी जगह जम गए थे। १० मिनट बाद सूर्योदय हुआ। कैमरे क्लिक कर रहे थे। एक निराली आभा प्राची मे फैल गई थी। लालिमा का एक बेजोड़ दृश्य।

कई बार बाहर जाना न होता तो वे लोग बैठी तास खेलतीं, कैरम और चोपड की बाजियां होतीं। हँसी-ठहाकों से

शलावास गूँज उठता था। सरस्वती अधिकतर स्टेटस मैन और विश्वमित्र दैनिक पढ़ती रहती थी। पता लगा, कि सिलीगुड़ी स्टेशन और दार्जिलिंग के बीच रास्ता टूट गया हैं, अतः चार-पाँच दिन जा नहीं सकतीं।

अरविन्द का पत्र कलकत्ता से दार्जिलिंग री-डाइरेक्ट कर दिया गया था। पत्र पढ़कर सरस्वती कलकत्ता में विचरण करने लगी। उस मित्र के साथ बिताये वे दिन एवं अन्य मीठे-खारे प्रसंग। उसका मन भारी हो गया। अध्यापिकायें मजाक करने लगीं—किस यार का पत्र है, बेचारी को घाव लगा है—हँसी-ठहाके, नकल। सूर्योदय के समय दार्जिलिंग के कपोलों पर लालिमा पोत दी जाती है पर सरस्वती के कपोलों पर तो कलकत्ता में ही पोती जायेगी। बेचारी को इन्तजार करना पड़ेगा। शायद प्रेमी वहा आ गया दिखता है।

"सरस्वती कोको कोला पीओगी या फैंटा, काला अच्छा लगता है या पीला।"

सरस्वती को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। अगर कलकत्ता में होती तो ये मजाकें उसे अवश्य स्वाभाविक एवं आनन्दमयी लगतीं। फिर भी अन्य दिनों के बजाय आज मन हल्का होना एवं चित्त प्रसन्न होना स्वाभाविक ही था।...... बंगले के बाहर देखा मीलों चिड़ियां की कतार उड़ी चली जा रही थी।

तीन चार दिन बाद सड़कें ठीक कर दी गईं। विश्रामगृह

के प्रबंधक से टूरिस्ट ओफिस के फोन नम्बर लेकर फोन किया। सबकी टिकट बुक की गई—दो वेटिंग लिस्ट में थीं। सिलीगुड़ी में सरस्वती ने पिता जी के मित्रों (अग्रसेन स्मृति भवन के मंत्री) श्री अशोक कुमार अग्रवाल एवं साथियों को फोन कर दिया, वे स्टेशन पर आ गये थे। चाय पानी का इन्तजाम कर दिया गया एवं गाड़ी की हर सुविधा का प्रयत्न किया गया।

× × ×

कलकत्ता आकर सरस्वती ने पिताजी से अरविंद का पता और फोन नम्बर पूछ लिए। सुबह आठ बजे ही बाथरूम के फाँवारे के नीचे जी खोल नहाकर कपड़े बदले और तैयार हो गई। खटखट करती जीने से नीचे उतरने लगी पर पिताजी के कमरे से गुजरते हुए जरा धीमे पांव चलने लगी। वह जकड़िया स्ट्रीट पर आ गई थी फिर मूनलाइट सिनेमा पार करती हुई सेन्ट्रल एवेन्यू पर पहुंच गई।

टैक्सी पकड़कर एल्गिन रोड रवाना हो गई। धर्मतल्ले पहुंचते पहुंचते रास्ता जाम हो गया था—सिर्फ लाल झंडे और एक राजनीतिक दल के सदस्य दिखाइ दे रहे थे। ऐसा लग रहा था कि लेनिन की मूर्ति तब सब देख रही थी पर भाषा उसके समझ में नहीं आ रही थी—चोलछे चोलबे ······इन्किलाब जिंदाबाद।····· 'कुछ रास्ता साफ हुआ तो टैक्सीवाला प्राइवेट गाड़ियों को ओवरटेक करता हुआ म्यूजियम भवन के पास

पहुंचा तो एक भिखारिन सामने आ गई। झटके से ब्रेक देना पड़ा। टैक्सीवाला उस बुढ़िया को अश्लील गाली बुदबुदाता हुआ आगे बढ़ गया। सरस्वती ने सोचा बुढ़िया के लिए कोई इन्किलाब नहीं था, जो ६० वर्ष से एक नीरस जीवन जी रही है। कितने रंगों की सरकारें सत्तारूढ़ हुई और पतित हो गईं पर पुश्तैनी गरीबों का कोई कल्याण न होगा। इस तरह के लोगों को मदर टिरिसा क्यों नहीं ले जाती? ''''आगे चल कर ऐसा लगा कि महात्मा गांधी की मूर्ति उस जुलूस का इन्त-जार कर रही है।'' '' '

जब एल्गिन रोड पहुँची तो रास्ता साफ था—नम्बर पूछ कर उस विद्यालय के दरवाजे में गाड़ी को प्रविष्ट किया—पोर्टिको में टैक्सी खड़ी कर दी। अरविंद के कमरे की स्थिति पूछकर सरस्वती ने एक तल्ले पर जाकर कालबेल बजा दी। दरवाजा खोला तो अरबिंद के सामने सरस्वती खड़ी थी—वह कुछ क्षण आह्लाद में फूला नहीं समा रहा था, नयनों से उसको पी रहा था। तब बैठाया, पूछा—कहां गई थी? मेरा तो मन एकदम बोझिल रहने लगा। सरस्वती कसमसा रही थी—उसने अपने हृदय के उद्गार आंसुओं की राह उड़ेल दिये—दोनो निस्पन्द। चाय नाश्ते में बाद ठहरी हुई भड़ास निकली—उपा-लंभ, औपचारिकता। सरस्वती जल्दी जाने की जिद करने लगी क्योकि पिताजी को कहकर नहीं आई थी। वह अरविंद को निमंत्रण देती हुई जाने के लिए उठ खड़ी हुई। दोनों ओर

मजबूरी थी—सरस्वती जाने के लिए मजबूर थी और अरविंद उसे न जाने दे ऐसा संभव नहीं था।............कई संघर्षों में वे दोनों हार चुके थे पर आगामी विजय के लिए कटिबद्ध थे। आशा पर संसार जीवित है। आज लड़ाइयां धन और अभाव के बीच थीं—कहीं सामाजिक एवं पारिवारिक द्वन्द्व और संघर्ष। मनोभाव की सबमें प्राथमिकता है, जो संकल्प लेकर चलता है वह अन्त में विजयी होता है.......... सब अपने अपने क्षेत्र में स्वाधीनता की लड़ाई है।

× × × ×

अरविंद की मा ने भी दिल्ली मे एक ठेकेदार की लड़की देखी—सुन्दर, इन्टर पास, गांव की-सी लगती थी, कला, साहित्य समाज सेवा से लेना देना नहीं। शादी मे अच्छा खर्चा करेगा, यह आकर्षण अरविंद की मां को ज्यादा था। पत्र आने के बाद अरविन्द का मन और उदास हो गया था—एक अजाने भय से, हो सकता है मां कोई बात पक्की कर ले। मा ने दिल्ली में जब उसे पूछा था कि कैसी लड़की चाहिए तो अरविंद ने ऐसे ही मजाक में एक दो कसौटी बताई थी। घराना ठीक था, सुन्दर थी, साधारण परिवारों के हिसाब से अच्छी पढ़ी-लिखी, बाप सम्पन्न। मौके बे मौके उसकी मा के पास मिठाइयां और फल आने लगे। बुढ़िया लौटा नहीं सकती थी। उसने सोचा अरविंद राजी हो ही जायेगा। और क्या हूर की परी लायेगा या करोड़पति की लड़की।

ठेकेदार प्रेमनाथ कलकत्ता आ धमका। एक दिन रहा, इस

तरह जांच पड़ताल की, जैसे सीमेंट का बोरा खरीद रहा हो। अरविंद का मन और भी विक्षुब्ध हो गया। उसने अप्रत्यक्ष रूप से ना कर दी, पर वह ठेकेदार सोचता था जैसे पी० डब्लू० डी० के आवेरसियर और इन्जिनियरों से चांदी के जूते से हां करवा लेता है वैसे ही इस साहित्य के इन्जिनियर से भी करवा लेगा। यही तमन्ना लेकर वह दिल्ली चला गया। पत्राचार होता रहा; ठेकेदार उसकी मां से भी संपर्क करता रहता।

× × ×

घनश्याम और सिम्मी कुछ दिन जयपुर में रहे। घनश्याम अज्ञातवास में भी था और अज्ञात समाज में भी। सिम्मी के पिताजी घनश्याम के विषय में कुछ कुछ सुन चुके थे, यह भी बात कान में पड़ गई थी कि सिम्मी का पत्र व्यवहार भी......। अधुना उन्हें गीतेश और घनश्याम का रवैया अच्छा नहीं लग रहा था। पिछले दिनों वे कलकत्ता गये थे तो गीतेश और उसकी मित्रमंडली के हावभाव अच्छे नजर नहीं आये संस्थाओं में लड़कियो का आना जाना कोई बुरी बात नहीं, वे आधुनिक नये समाज में भाग लेंगी ही पर तस्करों और काले-बाजारियों से उन्हें शख्त नफरत थी। गीतेश को भी वे ऐसे समाज विरोधियों का सहायक समझते थे। सिम्मी के पिताजी को पता नहीं था कि घनश्याम चिड़ावा गया या जयपुर में है, यह बात केवल सिम्मी जानती थी।

पर उन्हें पहिले यह भी पता नहीं था कि गीतेश आधुनिकता

और प्रगतिशीलता की आड में व्यवसायियों और राजनीतिज्ञों को सौंदर्य की सप्लाई करके खुश करता था। नकली मुखौटे से यह सब हो रहा था। समाज के मर्मज्ञ और पैनी नजर रखने वाले इसे ताड़ गये थे पर आजकल राजनीतिज्ञ भी अव्वल दर्जे के चरित्रहीन एवं दो-दो पैसे में सिद्धान्तों को बेचते हैं। कुछ लोगों ने इनका भंडा फोड़ भी किया……समाज की इस कोढ़ को कैसे दूर किया जाय। यहाँ तक कि गीतेश की पहली पत्नी के एक डागाजी का गर्भ रह जाने पर उसे तलाक दिया गया। वह बिहार में कहीं बेचारी बैठी सड़ रही है, उसके घरवालों ने गीतेश पर दावा ठोक रखा है—इधर गीतेश ने एक बंगाली नर्तकी की बहिन को फंसाकर विवाह कर लिया। यह राष्ट्रीय एकीकरण का नमूना है। नारी अपने आप में महा-शक्ति है पर वह ऐसे चरित्रहीनों की कमजोरी है—जो लोग आज बहुत बड़ी संख्या मे है। लोग बड़े बड़े नेताओं की व्यक्तिगत कमजोरी के खिलाफ प्रचार करते हैं पर यह तो सामाजिक भ्रष्टाचार के रूप मे फैल रहा है। ऐसे लोग समाज मे एक जहर फैला रहे हैं।……

तन, मन और धन से यह अनर्थ हो रहा है। तन ऐसे दलालों द्वारा सप्लाई किया जा रहा है—जिसकी गरीबी का फायदा उठाया जा रहा है। मन ऐसे एजंटों का स्वयं होता है एवं इसमें घनश्याम जैसे साथ देते हैं। धन भी घनश्याम जैसे तस्करों एवं चरित्रहीन कुछ बीमा कम्पनियों के पदाधिकारियों

एवं भ्रष्ट व्यापारियों से प्राप्त होता है। कलकत्ता की एक सेवा समिति में आज वह तस्कर ही मन्त्री है एव उसका अन्य दलाल सहमन्त्री है। उस सहमन्त्री एवं अन्य सदस्य दम्मानी को कुछ फर्जी खर्चे के बाउचर बनाने का मौका मिलता है और कभी-कभी भ्रष्ट लड़कियों के सहयोग का भी। उस समिति में एक गुप्त चेम्बर बना रखा है उसने।

सिर्फ यही नहीं एक बाल संस्था को भी इसका शिकार बना रहा है। प्रारम्भ में यह अच्छी संस्था थी पर आज वहां बाल-विकास के स्थान पर भ्रष्टाचार का विकास हो रहा है। १४ नवम्बर (बाल दिवस) के आयोजन को लेकर कई सप्ताह पहले भ्रष्ट नारियां, वहां बालक-बालिकाओं के अभिवावक के छद्म वेष में सक्रिय हो जाती हैं एवं ये दलाल सांस्कृतिक आयोजनों के नाम पर विकृति के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

एक पत्रकार सागर ने इन दोनों तरह के लोगों का पर्दाफास किया था—तथ्य भी दिये, असली फोटो छापे। गीतेश के साथी ने तो मन्त्रियों को भी इन तितलियों के जरिये ललचाना शुरू कर दिया था। स्थानीय एक विधायक का भी शोषण करने का प्रयत्न इन लोगों ने किया था—वह मित्रों के समक्ष यह स्वीकार करता था। पर सौभाग्य से बेदाग बच गया। अन्य लोग भी सक्रिय हैं और एक दिन यह जगल काटा ही जायगा।......

यह सब सोचकर सिम्मी के पिता ने उस पर कड़ाई बरतनी शुरू कर दी पर सिम्मी बच्ची तो नहीं थी—लेडी डाक्टर थी।

भविष्य के भय से पिता का मन आक्रांत था सिम्मी की अस्मिता एक व्यंग न बन जाय। ''' शिक्षा और संस्कृति के नाम पर उसमें कुसस्कार घर न कर जायें और वह गीतेश की तरह खानदान की इज्जत को दाग लगा दे'''।

सरस्वती अपनी स्कूल के बहाने बीच-बीच में अरविन्द के विद्यालय चली जाती थी। स्कूल से भी उस दिन छुट्टी ले लेती थी। सरस्वती भ्रष्ट नहीं थी पर वह एक युवती थी एवं किसी को अपना समझ कर नजदीक से देखना चाहती थी। संसार से क्या मतलब ?

जब भी वह अपने स्कूल नहीं जाती थी, काफी देर तक सुबह आइने के सामने खड़ी रहती थी। रंग चाहे गोरा न हो पर मुखाकृति एवं कट में गंभीरता, सम्मोहन एवं व्यक्तित्व झलकता था। श्वेत वस्त्रों में वह एक आकर्षक महिला प्रतीत होती थी, गुलाबी वस्त्रों में कामिनी। ऐसे दिन वह समय पर अरविन्द के पास पहुंच जाती थी। वह घंटो अपने से प्रेम करती थी एवं अरविन्द के प्रत्येक हावभाव, छोटी से छोटी भाव-भंगिमा को निहारती रहती थी। आज वह पीले सूट मे बहुत फब रहा था—इतना आकर्षक पहले कभी नहीं लगा था। दोनों मित्रों के लिए एक अनबूझ पहेली थी—एक ऐसा खुला रहस्य जिसमें लोग हमेशा भावुक बन जाते हैं। घंटों वे मौन धारण कर बठे रहे''''''मौन को तोड़ते हुए अरविन्द बोला—सरस ! कबतक हमलोग यह खिलवाड़ करते रहेंगे। सरस्वती के दिमाग में एक घटना कौंध गई''''''कई महीने पहले उसकी सखी मीरा के भाई ने जो एक चालू पुर्जा था एक दिन उस सखी की अनु-

परिस्थिति में सरस्वती का हाथ पकड़ लिया था एवं उसे जबरन बांहों में भींचने का प्रयास कर रहा था। झटका देकर दूर खड़ी हो गई थी……!

पर सरस्वती को पूरा यकीन था कि अरविन्द ऐसा नहीं है—उसने आजतक सरस्वती के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया। वह चाहता तो एकान्त में भेड़िया बन सकता था। क्योंकि प्रेमवश वह भी स्थिति को शायद अस्वीकार नहीं कर सकती थी। अरविन्द ने प्रस्ताव रखा—हमें आर्य समाज मन्दिर में जाकर शादी कर लेनी चाहिए…… ? पर कब ?

सरस्वती पिताजी को विश्वास में रखना चाहती थी…कुछ संस्कार भी थे। वह उनके पूछे बिना नाहक जल्दबाजी में कोई कदम नहीं उठाना चाहती थी। उस दिन वह अपने थामे हुए हाथ को छुड़ाकर द्वार पर जाकर खड़ी हो गई थी, बोली—फिर कभी निश्चय होगा, अब पर्याप्त समय हो गया है।…

एक दिन जब बाहर जाने का बहाना बनाकर २४ घंटे अरविन्द के पास रह गई थी। ……अरविन्द उससे इस तरह सावधानी और सभ्यता से व्यवहार कर रहा था मानो सरस्वती एक मृदुवसन तितली या कोमल फूल हो। उसे यह एहसास होने लगा था कि आर्थिक स्वतन्त्रता के कारण नारी का सम्मान कितना बढ़ जाता है। अरविन्द उसे इसलिये नहीं चाहता था कि वह आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र है पर व्यक्तिगत एवं दृढ़ नारीत्व के भावों के कारण। फिर आर्थिक स्वाधीनता सोने में सुहागा

है—बिना उसके सिद्धान्तों के क्रियान्वयन में पग-पग पर बाधा उपस्थित होती है। सरस्वती जानती थी कि सेठ कन्हैयालाल का विरोध अगर अरविंद के साथ शादी से हो सकता है तो जातीय विचारों के आधार पर न कि सिद्धान्तों या व्यक्तित्व के आधार पर। एक महिला विशेषांक में देखा कि खाते-पीते घरों की महिलाएँ भी अपने को वन्दिनी तुल्य अनुभव कर रही थीं, उनके शब्द उसके कानों मे गूँज रहे थे।

ये दो मुँही बातें नहीं चलेंगी। दो नम्बर के पैसे से यह सब हो रहा है, इसी आर्थिक भ्रष्टाचार से सामाजिक भ्रष्टाचार बढ़ता है—चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो या अन्य। यह कैसी विडम्बना है कि इन समाजसुधारकों के लड़के या तो अन्यमनस्क रहते है या खुलकर नियमों को तोड़ते हैं—यह है हमारे नवयुवकों की उड़ान जो चाद पर जाकर भी धरती पर रहना नहीं जानते।

इन्हीं विचारों में उलझी सरस्वती अपने भाग्य को सराह रही थी कि घनश्याम के साथ हल्दीघाटी युद्ध में हारने के बाद अब उसे विजय का मुँह देखना नसीब होगा। पिताजी को अन्तर्जातीय विवाह के लिए राजी कर लिया जायेगा, ऐसी पूरी सम्भावना थी। खुलकर अरविन्द को बोली—मैं मा के सामने यह बात रखूँगी, वह पिताजी के सामने रखेगी, और पूरी आशा है वे मान जायेंगे। अन्यथा अरविन्द ने भी योजना का समर्थन कर दिया पर वह जोध जवान नारी के सम्पर्क में

बड़ा अशान्त था—सरस्वती का हाथ थामे फुसफुसाहट के अन्दाज में अपनी प्रकृति को स्पष्ट कर रहा था। स्कन्ध पर हाथ रखते ही सरस्वती ने प्यार से फटकारा—विवाह के पूर्व यह शरीर तुम्हारा नहीं—हम इतने पाश्चात्य नहीं है।

अरविन्द के आहत स्वभाव और विलास ने प्रतिरोध किया—अगर मैं पाश्चात्यता में रंग गया होता तो तुम्हे विरोध करने का आज मौका ही नहीं मिलता। इसके अलावा कल के पूर्वी विचारधारा और सभ्यता को मानने वाले पोंगापंथी, आज पाश्चात्य कलेवर और संग्रह की भावना को धारण करने लगे हैं, उनके पुत्र पुत्रियां कॅबरे देखते हैं, नृत्य करते और देखते है, मिनी स्कर्ट हिप्सटर—यह सब क्या है ? पूर्वी सभ्यता के हिमायती पोंगा पंडितों और महाजनी सभ्यता के ठेकेदारों की कलई खुल गई है, सरस। उनके घरों में सारा पाश्चात्य सामान, विचारधारा पश्चिमी—तौर तरीके उठने बैठने का तरीका, स्कूलों का प्रवन्ध शिक्षा, सिनेमा, नटक, डिस्कोथेक—सबमें परमीसिवनेस...। आज वे ही स्थिर-स्वार्थी लोग पश्चिमी तत्वों का समर्थन करते हैं और पूर्व में उदीयमान उन वाद और तारों के प्रगतिवाद का विरोध कर रहे है—मैं उनकी बात कह रहा हूँ। पर मैं तो गांधीवाद को मानता हूँ—जिसने पाश्चात्य और पौर्वात्य के नाम का नहीं, अन्याय का विरोध किया था पर अन्यायी का नहीं। राजनीतिक क्षेत्र में इसी गांधीवाद को अन्य पानी में डाइल्यूट करना पड़ेगा, मिलाना पड़ेगा—उसका कुछ

भी नाम दिया जा सकता है। आज पुरुष के अन्याय का भी विरोध करना होगा पर प्रेम का नहीं. उन जड़ मूल्यों को भी नारी को हटाना होगा। प्रेम अलग तत्व है, दुश्चरित्रता अलग। आज नारियाँ बड़े-बड़े पदों पर हैं, कई सौ वर्ष सामंती युग मे भी थीं—यहा तक की उसने युद्ध किये हैं—वैदिक काल में भी गार्गी मैत्रेयी ने शास्त्रार्थ किये थे। अतः···

सरस्वती बोली—फिर भी मानना पड़ेगा कि यह तुम्हारी निर्बलता है। अरविन्द झेंप गया—कल माँ से वही योजना बताना····

× × × ×

घनश्याम के छोटे भाई की शादी में भी दहेज की माग को लेकर जयपुर में शादी के फेरों में वक्त भी बड़ा हगामा हो गया। अशोक फेरो पर नहीं बैठा (उसके पिताजी एकदम पुरातन पंथी विचारधारा के व्यक्ति हैं।) इस बात को लेकर कलकत्ता और जयपुर मे बड़ी चर्चाएं चल रही थी। जयपुर मे छोटी चोपड़ पर एक जनसभा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बुलाई। संस्था के मीरा मार्ग के दफ्तर से लेकर वहां तक एक जुलूस निकाला गया—सरकार भी उसमे सहयोग कर रही थी जनसभा में कार्यकर्ताओं के उद्गार फूट रहे थे—कइयों ने कहा लड़की की शादी अशोक से कभी नहीं करनी चाहिए, अन्य लड़के को तैयार कर उसी के साथ कर देनी चाहिए। वातावरण गर्म था।

कलकत्ता में भी यही हलचल हो रही थी। ज्येष्ठ (मई) की तपती दुपहरी में उमस से शरीर पसीने हो रहा था। पंखे की हवा जल रही थी। खिड़की से नजर दौड़ाने पर कड़कती धूप का अनुभव हो रहा था। सरस्वती और उसकी दोनों बहिनें लेटी हुई थीं, सरस्वती के हाथ में उपन्यास था और उसकी माँ तकिये की गिलाफ सिलाई कर रही थी। सरस्वती ने बात प्रारम्भ की—उस लेखक…अरविन्द की…बड़ी इज्जत है मां। पिछले साल अपने घर आये थे, तब तुमने देखा था ?'….

मां ने कहा—'अच्छा लड़का है, आजकल क्या करता है ?….'

सरस्वती—कमाता भी १५०० रु० है।

मां—साफ-साफ बताओ क्या बात है ? तुमको क्या लेना है …पसन्द है क्या ?

सरस्वती अपनी देह में गड़ी जा रही थी—'मां वो मुझे बहुत मानते हैं।' मां के पूछने पर सरस्वती ने बताया उनकी जाति चोपड़ा है। बुढ़िया के मन पर आघात लगा—हूँ। यह कैसे सम्भव है ? सरस्वती ने कहा—नहीं तो मैं जिन्दगी भर अविवाहित रहूँगी, यह मेरा आखिरी फैसला है। दो दिन के बाद मां राजी हो गई, योजना बनाइ गई कि सेठ कन्हैयालाल को इसके लिए राजी किया जाय। सेठजी को जब सूचना दी गई तो उन्होंने जाति पांति के दृष्टिकोण से अपना असमर्थन प्रकट किया। उसकी मां ने कहा—'सर्वेंगुणाः कांचनम् आश्रयंते।" अरविन्द अच्छा कमाता है—पढ़ा लिखा है। सेठ

जी दहेज आदि कुरीतियों के खिलाफ थे, सरस्वती को भी यही शिक्षा दी थी, घनश्याम जैन से भी उसका सम्बन्ध विच्छेद कराने में दहेज भी एक कारण था। पर वे प्रेम विवाह के पक्ष में नहीं थे। सरस्वती की मा ने कहा सरस्वती तो मा वाप को पूछकर विश्वास में ले रही है, इस विवाह में क्या एतराज है। फिर सरस्वती अगर आर्य समाज के मन्दिर में विवाह करती है इससे आपकी ही नाक कटती है। सेठानी रूआंसी हो गई थी। सेठजी का वात्सल्य उमड़ पड़ा, दो दिन वाद राजी हो गए। उनको गौरव था कि उनकी वेटी का चरित्र ऊँचा है।

× × ×

नवशिक्षालय विद्यालय के सचिव श्री नाहटा पक्के व्यवसायी और अव्वल दर्जे के लालची निकले। जव विद्यालय जम गया और पन्द्रह हजार रुपये मासिक लाभ होने लगा तव अरविंद को यह कहकर हटा दिया कि वह विद्यालय में लड़कियों को बुलाता है। इस अन्याय के विरोध में कार्यकर्त्ताओं ने एक जन-सभा बुलाई जिसमें श्री नाहटा के नकली मुखौटे का फर्दाफास हुआ। वक्ताओं ने वताया कि स्कूल की माली हालत वहुत अच्छी है। फिर भी श्री अरविंद चोपड़ा को हटाने का प्रस्ताव स्कूल की प्रवंधकारिणी समिति में पास करा दिया गया जहां श्री नाहटा के चमचे भरे पड़े हैं। वड़ावाजार ही नहीं अन्य जगह के निजी स्कूल कालेजों में आर्थिक घोटाला और धांधली आम वात हो गई है। लज्जा की वात तो यह है स्कूलों के संचालक लोग तथा कथित समाज

सेवी ही हैं। इन घोर अनियमितताओं से साधारण आदमी क्या प्रेरणा ले सकता है? स्कूलों में ही नहीं बड़े बाजार के अस्पतालों एवं अन्य स्वयं-सेवी सामाजिक संस्थाओं के जन-जीवन की भी यही कहानी है। संस्थाओं के मंत्री, सभापति लोग अपने आदमियों को कर्मचारी रखते हैं और उनके गोलमाल करने पर किसे कहा जाय। तत्पश्चात् अरविंद ने सारी स्थिति कार्यकर्ताओं के सामने रखी। कार्यकर्ताओं ने निन्दा प्रस्ताव पारित किया एवं चार दिन बाद अनशन करने का निर्णय लिया।

दूसरे दिन दहेज की घटना को लेकर एक सभा बुलाई गई। वक्ताओं ने कहा कि घनश्याम समाज-सेवी का मुखौटा लगाकर घूमता था पर उसकी तस्करी एवं उसके भाई द्वारा दहेज की मांग से उनलोगों की कलई खुली। यह अत्यन्त क्षोभ का विषय है कि इस तरह के लोग समाज पर हावी हैं। कार्य कर्ताओं को एकजुट होकर ऐसी हरकतों का मुँह तोड़ जवाब देना चाहिए। विगत दिनों समाज सुधारक नेता के पोते की शादी में दहेज लिया गया एवं पडाल आदि में पचास हजार रुपये खर्च किये गये।

× × × ×

दिल्ली में अरविंद की बहिन रीता कॉलिज के प्रथम वर्ष में पढ़ रही है, उसकी आयु उन्नीस वर्ष की हो गयी है। उसी कक्षा में एक लड़का रमेश पढ़ता है जो प्रिंसिपल श्री सुधाकर

अरोड़ा का पुत्र है। रमेश की बहिन प्रेमा उससे बड़ी है और द्वितीय वर्ष में पढ़ती है। वाद-विवाद प्रतियोगिता मे रमेश और रीता तथा गीता अच्छे नम्बर प्राप्त करते हैं, अतः उन लोगों का अच्छा परिचय हो गया है। रमेश और रीता का परिचय प्रगाढ़ मैत्री मे बदल गया है—यहां तक कि गीता और अरविंद की मां उन दोनों की शादी करवाना चाहती हैं। प्रिंसिपल लालची व्यक्ति है वह बिना दहेज दक्षिणा के विवाह करने वाला नहीं है। बात यहाँ से आगे न बढ़ सकी। बीस हजार रुपए की मांग थी...... ।

× × × ×

अरविंद ने पचास हजार रुपए मासिक किराये पर एक छोटा मोटा कार्यालय ले लिया। जुलाई की मानसूनी वर्षा से सड़कें धुल गई थीं, जगह जगह पानी इकट्ठा हो गया था। मेघदूत काव्य की पावस ऋतु प्रेमी-प्रेमिका के हृदय मे एक चिर-प्यासी हूक उत्पन्न करती है। मन में गीत उभर रहा था—

वाय चल्या था पीपल जी राज,
हा जी ढोला होय रही घेर घुमेर।
बिलसन की रुत चाल्या चाकरीजी,
म्हारी लाल नणद रा वीर॥

सरस्वती कभी कभार उसके कार्यालय में आकर घंटो बैठी रहती, अरविंद की कमीज के बटन टूट जाते तो टांक देती उनके किसी उपन्यास की मैनुस्क्रीप्ट फेयर करनी होती तो कर देती।

वंगला के रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विष्णु दे, शरतचन्द्र शकर, समरेश वसु, तेलगू के श्री ज्वालामुखी चेरीपंडा राजू निखिलेश्वर, पंजाबी के करतार सिंह दुग्गल, अमृता प्रीतम, सन्तोख सिंह धीर, रामस्वरूप अंणखी, सुखवीर, मलायलम् के शंकर कुरुफ, डोगरी के कर्ण सिंह, पद्मा सचदेव, मैथिली के हरिमोहन झा नागार्जुन, उड़िया के गोपीनाथ महंती, गुजराती के पन्नालाल पटेल, उमाशंकर जोशी, चन्द्रकान्त वख्शी, सरोज पाठक, मधुराय, मराठी के पी० एल० देशपाडे, विजय तेन्दुलकर, अरविंद गोखले, कन्नड़ के शिवराम कारन, एन० डी० कृष्ण मूर्ति आदि के अनुवाद पढ़ती रहती। उसके मनोभाव से स्पष्ट था कि वातों की गुदगुदी की वह सदा अपेक्षा करती थी। अपने विद्यालय जाने का वैग मेज के एक कोने पर रखती हुई वोली—पिताजी इस प्रेम-विवाह के लिए राजी नहीं है।

अरविंद—मैं भी प्रेमविवाह के पक्ष में साधारणतः नहीं हूँ—सुधारक कहते हैं कि प्रेमविवाह (लड़के लड़की के स्वतंत्र चयन) से दहेज की समस्या हट जाती है, पर वह तो पाश्चात्य देशों में भी होता है, जो घोर पूँजीवादी व्यवस्था के हामी है। वहां भी भ्रष्टाचार का वोल वाला है। गड्ढे से निकले तो खाई में गिर गए। प्रेम विवाह है शिक्षित और कमाऊ उम्र के लोगों के लिए। देश की असंख्य जनता अशिक्षित है। वह प्रेम विवाह को एक खेल और मुक्त-यौन (परमीसिवनेस) के संदर्भ में ही समझती है, कम उम्र के मनचले शिक्षित लड़के लड़कियाँ भी उसे

दैहिक भ्रष्टाचार के अलावा और कुछ नहीं मानते—जिस दिन यह होने लगेगा उस दिन देश और समाज का दुर्भाग्य जागृत होगा। आर्य समाज ने इसे कभी मान्यता नहीं दी, हालाकि उसने प्रायः एक सौ वर्ष पहिले सुधार और सामाजिक क्रांति का शंख फूंका था।…… फिर सुधारक लोग अपने लड़के लड़कियों को इस प्रेम-विवाह की इजाजत क्यों नहीं देते ? किसी की कलमुँही लड़की के अगर शादी से पहिले गर्भ रह जाय या किसी से यौन सम्बन्ध हो तो यह प्रेम-विवाह नहीं—वेश्यावृत्ति है, जो सनातन काल से चली आ रही है। गाधीजी ने कभी इस भ्रष्टाचार का समर्थन नहीं किया था। जयप्रकाश. फिरोज गाधी या देवदास गाधी, सरोजिनी नायडू, पद्मिनी सेन गुप्ता के अन्तर्जातीय विवाहों के पीछे दो प्रौढ़ व्यक्तियों को स्वचयन की इजाजत देना था। राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना था। आज युवकों मे वह भावना कहा ? अगर है तो प्रेम-विवाह उसका प्रतीक नहीं, जो पाश्चात्य सड़ीगली व्यवस्था का एक उदाहरण है। यह देश उसे स्वीकार नहीं करेगा।

………पर बात दरअसल परिस्थिति की है। हमारी परिस्थिति भिन्न है। मायूसी वश उसने कहा—सरसी, अब क्या होगा ?…… अरविंद की आखे शून्य में लगी थीं।……ऊधर उसे स्मरण हो रहा था कि किस तरह बहिन रीता के संबंध के लिए प्रिंसिपल सुधाकर अरोड़ा बीस हजार की मांग कर रहा था……सामाजिक संघर्ष में दोनों सब कुछ हार रहे थे,

अभिमन्यु चक्रव्यूह में फंस गया था—समाज के शत्रु वापिस नहीं लौटने देंगे। ····· 'सरस्वती कभी हाथों से अपना आंचल ठीक कर रही थी, कभी अंगुलियों से मेज ठकठका रही थी। एक अजीव दुविधा, पशोपेश·······

सरस्वती मौन को तोड़ते हुए वोली (मजाक के लहजे में) पिताजी राजी हो गए हैं। इतनी क्या चिंता है ?

—सच !' '' 'अरविंद ने अपने दोनों हाथों में सरस्वती के हाथों को थाम लिया, उसे यकीन नहीं हुआ था।

—पिताजी को समझाने में माँ को और मुझे शास्त्रार्थ करना पड़ा, उसी बचकाना प्रेम-विवाह की कल्पना को लेकर'''' अन्त में उन्हें परिस्थिति का दूसरा पहलू समझाया गया। नारी की आर्थिक स्वतन्त्रता को न समझते हुए भी वे उसके भाव को समझ रहे थे '''जाति-पांति गा हौवा उनके दिमाग से निकाला गया। चरित्र के सव नीचे हैं—चरित्र प्रमुख है, अन्य सिद्धान्त गौण। उनका अनुभव भी तो यही कह रहा होगा।

अरविन्द की आंखों में और सरस्वती के सुर्ख गालों पर आन्तरिकआह्लादनुमायांहोरहा था। फिर सरसीनेमटकती आंखों और नाचते अंगूठे से अरविंद का अभिवादन किया। एक महीने वाद शादी की योजना बनी—आरजी तौर पर वस्त्रों का एक खाका वनाया गया, कार्यक्रम का एक ढांचा तैयार किया गया। दोनों के मन-प्राण में एक वेशुमार खुशी भर गई थी। भविष्य के सुन्दर सपने, जिसमें मध्यवित्त परिवार खोये रहते हैं।

सिम्मी और घनश्याम का मिलना जुलना लुक-छिपकर चल रहा था। घर के उत्सवों मे लेडी डाक्टर कपड़े अनिच्छा पूर्वक बदल लेती और तिनतिनाती हुई एक कोने में बैठ जाती थी।

जयपुर में अगस्त (भादो) में उमस कम हो जाती है और मौसम सुहाना। जिस दिन में पूजा थी उसी दिन कोड शब्दों में सिम्मी को एक पत्र मिला (वह समझ गई। कि यह पत्र घनश्याम का है।) उसी समय एल० एम० बी० होटल मे बुलाया था, जहा एक पार्टी का आयोजन है। घनश्याम का मकसद दूसरा भी था, किसी तरह सिम्मी को राजी करके सिविल मैरेज कर ली जाय। ...सिम्मी का देह घर में और मन होटल में था। उसके मन में आया कि पिता के इसी शोपण और दवाव के कारण कई लड़किया घर से भाग जाती हैं '' आत्म हत्या कर लेती हैं' ''पर वह लेडी डाक्टर है, इतना साधारण काम उसके व्यक्तित्व को खत्म कर देगा...लोग हसेंगे।

'वह जायजा लेने लगी कि कब सारे लोग व्यस्त हों और वह रोगी को देखने का वहाना वनाकर...।

सिम्मी अपने पिताजी के खिलाफ जाने का साहस नहीं वटोर पाती थी.... 'सुशिक्षित होने पर भी अभी अनुभव मे अपरिपक्व थी। ख्याली पुलाव के अलावा कुछ न कर सकती थी। गोष्ठियों में डा० प्रमिला कपूर (जो प्रसिद्ध विवाह सलाहकार हैं) और श्रीमती मेहरून्निसा परवेज (सामाजिक लेखिका) के भाषण सुनकर आश्वस्त जरूर हुई थीं, लेख पढ़कर

अच्छी कल्पना भी करती थी। लेडी डाक्टर होने के नाते आने जाने की आजादी भी जरूर थी, जिसका वह दुरूपयोग भी कर लेती थी पर विवाह करना उसके वश का नहीं था। इसमें दोष उसके पिताजी का नहीं था घनश्याम की बदनामी का था।

···सिम्मी सोच रही थी अभी इस घरेलू आयोजन मे दो घंटे लगेंगे, हो सकता है इतने समय में एल० एम० बी० होटल का कार्यक्रम खत्म न हो जाय। वह एक अव्यक्त खीफ से भर उठी थी···पर दिल को मजबूत और इरादे को पक्का बनाती रही। ······पिताजी चीं-चपड़ करेंगे तो वह जबदस्ती चली जायगी—वह कोई जर-खरीद गुलाम तो है नहीं, वह मन ही मन खदबदाती हुई बाहर जाने के लिये तैयार हो गई। ····घर वालों पर वितृष्णा प्रकट करती हुई मीरा मार्ग लांघती, मिर्जा इस्माइल रोड की तरफ बढ़ गई, फिर एल० एम० बी० होटल।

× × ×

होटल में चहल पहल रोज ही रहती है पर उसदिन विशेष थी। वाद्य संगीत की सुमधुर ध्वनि आकर्षित कर रही थी—बैंकेट रूम में सफेद मेजपोश और ताजे फूलों की सुवास मन को भर रही थी, वह उद्दाम तरंगे ले रहा था। आजंतुकों का तांता लगा था—गोष्ठी और खाने का कार्यक्रम। सिम्मी की आखें घनश्याम को ढूंढ़ रही थी...कहीं नहीं था। ····वह बार में दो लड़कियों के साथ बैठा था···दस मिनट बाद तीनों जाकर कोने

की सीटों पर बैठ गये। सिम्मी की नजर पड़ते ही वह सब कुर्सियों को लांघती हुई एक कोने से दूसरे कोने में पास की कुर्सी पर जाकर धंस गई—गुस्से में लाल।

—हेलो सिम्मी। ···यह है होटल नर्तकी···यह समाज सेविका। मिस चंचला···।

बावजूद तल्खी के सिम्मी के होठों पर हँसी आ गई। आप तो ऐसे बोल रहे हो जैसे कोई नया परिचय हो।

—अरे भाई! ये मेहमान है।

मद और सौन्दर्य के बीच वह हाथी पागल हो गया था। उसके मुँह से दुर्गंध आ रही थी···संतुलन बिगड़ जाने के कारण सिम्मी गिरती पड़ती बैंकट रूम से बाहर। लिफ्ट स्वयं ही चलाकर नीचे तल्ले में गई, हाथ में चोट आ गई थी। रास्ते में उसे दिवा-स्वप्न आने लगे। तांगे मे बैठी-बैठी सोच रही थी कि पुरुष कितना चालाक है वह मेहमान-मेहमान करता अपने किये को ढक लेता है—इस पितृ सत्ताक युग मे यही होता आया है—मातृ सत्ताक युग कब आयेगा—आज महिला प्रधान मन्त्री होते हुए भी···फिर खयाल आया उदयपुर के डाक बंगले में मातृ सत्ताक युगीन लड़की ने क्या बकशा था—अरविन्द को बरामदे में खींचकर ले गई थी—उसके दिमाग में उसका समाधान कौंधा "वह तो मौसम, एकान्त और परिस्थिति थी।"

जैसे चित्रकार इजल के कैनवेस पर चित्र बनाता है उसी तरह वह शून्य पर मनवांछित काल्पनिक आधे-अधूरे चित्र बनाती

मीरा मार्ग में प्रवेश कर गई। घर जाकर सोचती रही—पुरुष क्या नहीं कहता "एवरी वूमन इज एट हार्ट ए रेक"···पर वास्तव में पहल पुरुष करता है और अधिक मामलों में। ···मीरा को उसके खानदान ने क्या-क्या दुःख नहीं दिए, जहर का प्याला ··आज भी पुरुष अपनीकमजोरी को ढकने के लिए नारी के समानाधिकार की बातें करने लगा है—अभी थोड़े दिन पहले सभ्य और शिक्षित कहे जाने वाले बंगाली परिवार में सुरूपा-गुहा मृत्युकांड हुआ था···प्रेम विवाह के हामी अनचिहों रास्तों में भटकते हैं···जिन्होंने प्रेम-विवाह किये नहीं वे कैसे समझें कि इसके गुण दोष क्या है····घनश्याम का और मेरा प्रेमविवाह होता तो भगवान जाने भविष्य में मेरी बर्बादी ही होती—

दूसरे दिन विस्तार से सिम्मी ने अपनी सहेली को बताया··· सहेली ने उसे सुझाव दिया कि डा० प्रेमनाथ तुम्हें कितना चाहता है। वह घनश्याम से २ या ३ वर्ष बड़ा जरूर होगा पर सीधा-साधा और एक देवता पुरुष है—वह घनश्याम की तरह ये पार्टियां और चुहल जानता ही नहीं···यह आधुनिकता ही तो खतरनाक है (सिम्मी को भी एहसास हो रहा था।)···

× × ×

भादों में वर्षा (पावस) की छटा देखते ही बनती है। धुरी एक्सप्रेस हरियाली को लांघती हुई चली जा रही थी—हरे-हरे पेड़-पौधों में खड़े रंगीन वस्त्र पहने स्त्री-पुरुष बौने से लग रहे थे। सरस्वती अधलेटी उपेन्द्र नाथ अश्क का एक उपन्यास

पढ़ रही थी, जो उसे अपने एक चरित्र-सा लग रहा था—एक हाथ से वक्ष के नज़दीक आंचल को पकड़े हुए थी। धुंधलका घनीभूत हो रहा था, जिसको रेल चीरती चली जा रही थी। दोनों बगल दीप-से लट्टू टिमटिमाने लगे थे। सरसी होवर क्राफ्ट की तरह सुरक्षित बर्थ पर उड़-गिर रही थी। मन एकदम हवाई-जहाज की तरह डाइभ कर रहा था—इन्हीं विचारों में डूबती उतराती जब उपन्यास के उस प्रसग पर पहुँची जिसमें एक पात्र अपनी प्रेयसी को घसीट कर कमरे के अन्दर ले जाता है—तो वह सहसा चीख उठी—सिगरेटों का कश लगाते हुए अरविंद ने आशंका से पूछा क्या हुआ ?——सरसी ! उत्तर मिला—कुछ नहीं। वह संयत हो गई थी। अरविंद ने उपन्यास उठाकर दूसरी बर्थ पर फेंक दिया।

× × ×

रात के दस बजे थे। घर पर आघेमन से खाना खाया था, अरविंद को भूख लगी थी। उसने सरस्वती को टिफिन बक्स की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'खाना खा लीजिये।' सरस्वती के इन्कार करने पर वह स्वयं खाने के लिए तैयार हो गया। खाना खा तौलिए से हाथ पोंछकर पान का मसाला निकाल कर खाया। रेलगाड़ी में निश्चित नींद नहीं आती फिर भी एक मुकम्मिल ऊंघ बनी रहती है, कभी सोते कभी जागते वे लोग चले जा रहे थे। पानी की झटास बीच बीच में ध्यान को बंटा रही थी, उन्होंने चद्दर भी थोड़ी थोड़ी ओढ़ली थी। झाझपुर

जंक्शन, कटक, भुवनेश्वर पहुँचते पहुंचते स्वर्णिम प्रभात हो गया था। डाइनिंग कार का वेरा चाय ले आया था—ट्रे सामने रख दी। सरस्वती ने दो प्यालों में दूध डालकर टी—पोट से चाय स्ट्रेनर के जरिए छानकर शक्कर के चतुष्कोण मिलाने लगी। तिवारी रेस्तोरां के पैक संदेश निकालकर सामने रख दिये। पांच घंटे बाद पुरी स्टेशन आ गया। 'बाबू मजदूर' की चिल्लाहट से स्टेशन के माहौल में चहल पहल हो गई थी। 'सी' श्रेणी के होटल में समान ले जाकर पटक दिया—जनता गुसल, जनता पायखाने, कमरे छोटे छोटे। स्नान के बाद सरस्वती साड़ी बदलकर किसी तरह कमरे में आई, उसके चेहरे पर झेंप के चिन्ह स्पष्ट दीख रहे थे। अरविंद से कहा—आप भी जल्दी नहा धो लीजिए, दो बजे टैक्सी से कोणार्क चलना है——। वह साड़ी इत्मीनान से बदलने लगी—हरी साड़ी, हरा ब्लाउज। अरविंद पीले बुशर्ट पैंट पहनकर तैयार। टिफिन केरियर से खाना निकालकर, गर्म नमकीन बाजार से मंगाकर खाया-पीया। बारह बजे से पहिले पुरी के प्रसिद्ध मंदिर पहुँच गये। प्रसाद की दूकानों पर पंडों की कतार लगी थी। सब झपट पड़े, हाथ धोकर पांच रुपये का प्रसाद लेकर पंडे के हाथ में थमा दिया, मंदिर के मुख्य द्वार पर भीड़ जमा थी। द्वार खुलते ही दर्शनार्थी भक्त दौड़ पड़े, अरविंद एवं सरस्वती ने भी दर्शन किये, हाथ जोड़े, सिर झुकाया और कुछ पैसे भगवान की सेवा में अर्पित किये। पंडे ने बताया कि ये तीनों मूर्तियां कृष्ण, बलराम और

उनकी वहन की हैं, वहुत पुरानी हैं एवं मन्दिर में सारे हिन्दुस्तान तथा विश्व के लोग भी आते हैं। तत्पश्चात् पुरी समुद्रतट पर जाकर घूमते हुए सैलानियों (विदेशी भी) की क्रीड़ा देखने लगे। वड़ा सुरम्य प्राकृतिक स्थल है। 'वीच' के पास ही वने सरकारी सूचना कार्यालय से कुमारी वोस से सूचना लेकर कोणार्क की टैक्सी भाड़े पर की।

कोणार्क का फलैशनुमा चुम्वक दूर ही से दिखाई दिया। टैक्सीवाले ने वताया कि वही चुम्वक वड़े वड़े विदेशी जहाजों को अपनी ओर खींच लेता था जिससे आक्रमण विफल हो सके—अरविंद मन में सोच रहा था कि वह चुम्वक ही तो है जो उसे सरसी की तरफ खींच रहा है। टैक्सीवाले ने सूर्यमन्दिर के द्वार के पास लाकर टैक्सी खड़ी कर दी। गाइड को इशारा किया तो वह साथ हो लिया। दूर ही से काले पगोडे की भव्यता प्रभावित कर रही थी, विश्वकर्मा मूर्तिकार और स्थापत्य कला का निर्माणकर्ता अपना प्रभाव विकीर्ण कर रहा था। यह अपने आपमें एक अद्वितीय मन्दिर है जिसके ऊपरी भाग तक भी चढ़कर पहुंचा जा सकता है। मन्दिर के तीन भाग हैं, सवसे नीचे काम-क्रीड़ा के विभिन्न आसनों में लीन युग्म, उसके ऊपर (मध्य में) यक्ष और सवसे ऊपर सुर-गण। मन्दिर का गर्भगृह भी है।

द्वार पर जो पशु मूर्तियां द्वारपालों के रूप में हैं। सूर्यमन्दिर होने के कारण सूर्य भगवान को चौवीस पहियों के रथ पर

आसीन दिखाया गया है। गाइड समझाते समझाते ठिठक गया था क्योंकि साथ में एक नारी थी। ऊपर चढ़ने से पहिले ही काम केलि में मग्न स्त्री पुरुषों के पचासों जोड़े, पीन उरोजों की कसरत; मूर्तियाँ खड़ी खड़ी काम के नये नये प्रयोग दिखा रही थीं, वात्स्यायन के कामसूत्र का रूपान्तर। सनातन धर्म इसीलिए सनातन है क्योंकि वह परिवर्तनशील है। श्री निहाररंजन-रे के अनुसार इस मन्दिर का बहुत गूढ़ अर्थ है, (मनुष्य के शरीर में भी तीन भाग है, ऊपर दिमाग, मध्य में हृदय आदि, अधो भाग में अस्पृश्य अंग; उसी प्रकार मन्दिर में यह स्पष्ट प्रदर्शित किया गया है।) श्लथ अंगों में मूर्तिकार ने जान डाल दी है, सब कुछ स्पष्ट है। बिना झिझक के विश्वामित्र को भी नहीं छोड़ा है। चित्र, खींचते लोग ऊपर चढ़ते जा रहे थे। यक्षों में संगीत का राज्य था। ऊपर की तरफ मन्दिर की अधिष्ठाण देवी की मूर्ति है। सरस्वती शर्म से झुक रही थी पर कुछ देर बाद एडजष्ट कर लिया, आखिर और भी हजारों नारियाँ यहां आती हैं। नेहरू जी कभी आये थे एवं इसकी बड़ी तारीफ की थी। अरविंद भी आस्ते आस्ते संयत हो गया था। उसने मार्गदर्शक से पूछा—मन्दिर में इस कामसूत्र के होने का अर्थ क्या है? गाइड ने चाभी खोल दी—हिन्दूधर्म के प्रति लोगों की श्रद्धा ढलने लगी तो लोगों को आकृष्ट करने के लिए समकालीन राजाओं ने यह उपाय निकाला।

—सरस्वती जी! आपका क्या खयाल है, 'उन मूर्तिकारों की

बातें वे ही जानें। जो भी हो स्वाभाविकता और वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता, जिसका अपना चिरंतन महत्व है।' अरविंद सोचने लगा—गांधीजी ने भी निर्वस्त्र प्रयोग सुशीलाजी एवं अमृत कौरजी आदि के साथ किये थे—वह भविष्य के सपनों में खो गया। गाइड की जल्दी एवं अरविंद की देर करने की इच्छा में एक अजीब प्रतियोगिता चल रही थी।

थोड़ी देर बाद उस पगोड़ा से नीचे उतरना पड़ा। टैक्सी वाले को भुवनेश्वर जाने का इशारा किया। वहां भी कई मन्दिर प्रसिद्ध हैं। मन्दिरों के बाहर जूते खोलते खोलते एक नीरस कसरत हो जाती है। एक मन्दिर के पास एक ऐसा सोता है जिसका पानी पीने से कुष्ट आदि बिमारियां ठीक हो जाती हैं, उसके पानी का रंग दूध मिश्रण के रंग जैसा लगता है। भुवनेश्वर स्टेशन से कलकत्ते की गाड़ी पकड़ी। तत्पश्चात् बोय को खाने का आर्डर दिया, खा-पीकर बर्थ पर धंस गये। अरविंद को अच्छा लग रहा था पर सरस्वती को अटपटा-सा।

सुबह हवड़ा स्टेशन पहुंचने पर पता लगा कि ट्रामों बसों के किराये बढ़ा देने के प्रतिवाद में कुछ राजनीतिक दलों ने सड़कों पर धरना देकर ट्रामें बंद करवादी थीं। टैक्सीवाले भी डर गये थे। बड़ी मुश्किल से सरस्वती ने अपने घर फोन कर कार मंगवा ली थी।

× × × ×

अरविंद के कार्यालय के भीतर का हिस्सा मकान के दालान

से सटा हुआ था, जिसमें कुछ फूल लगा दिये थे। गुलाब और रजनीगंधा के फूलों की सुवास कमरे में भर गई थी। सड़क की तरफ बारिस क़ी फुहारे केलि कर रही थीं; सड़क जल से आप्ला-वित हो गई थी। सरस्वती सोच रही थी कि कब बरसात रुके और कब घर जाये—विवेकानंद रोड और जकरिया स्ट्रीट के बीच दस मिनट का रास्ता है। एक गुलाब का फूल तोड़कर अरविंद ने सरस्वती को समर्पित करते हुए कहा कि इसका रंग निखालिस गुलाबी है। दोनों भविष्य की चिंताओं में खो गए—जीवन में कितने उतार-चढ़ाव आते हैं। हवा में खुनक थी—मन के घोड़े दौड़ रहे थे, हरावल दस्ते की तरह अरविंद आक्रमण करता आगे बढ़ गया था—अचानक दरवाजा खटका—टेलीग्राम—टे—ली—ग्रा—म।

खुशी और आशंका के बीच मन आन्दोलित हो उठा, तार कहां से आ सकता है अरविंद ने सोचा मां तो अच्छी है।…… दरवाजा खोला, हस्ताक्षर किये, तार लिया, खोला। वह सन्न रह गया, आसन्न परिस्थितियाँ पहिले से ही आभास दे देती हैं। प्रिंसिपल अरोड़ा का तार था—"एरेंज और रिजेक्ट मैरेज ओफ रीटा रमेश"—वह समझ गया शादी की जल्दी का मतलब पचीस हजार रुपए उनकी अनबुझी प्यास प्यास ही रह गई पर बहिन की शादी की फिक्र घुन की तरह काटने लगी।——मन मसोस कर रह गया—। सरस्वती ने पूछा क्या है। सब ठीक है तो। तार झटक कर पढ़ने लगी—एरेंज—फिर तपाक से बोली-

(जसे शादी बच्चों का खेल है)—इसमें चिंता की क्या बात है ? भगवान सब ठीक करेगा—शादी विवाह तो गृहस्थी की एक आवश्यकता है। सरस्वती की स्वयं की शादी एक जंजाल बन गई थी और दूसरी के गर्भ में क्या है पता नहीं। नारी स्वभाव से सरल है और विवाह को एक सामाजिक आवश्यकता मानती है। मध्यवित्त नारी को आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव खलता है फिर भी वह कोई प्रयास नहीं करती—इन बेड़ियों को काट फेंकने का साहस नहीं जुटा पाती। भारत के लिए यह एक दुर्भाग्यसूचक चिह्न है वरना देश और समाज की बहुसंख्यक समस्यायें स्वत हल हो जातीं। यह एक मूढ़ और ज्वलंत समस्या है जिस पर सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को सोचना है और उसे हल करना है अन्यथा गर्हित स्थिति को कोई रोक नहीं सकता।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:।"

कलियुग में नारी की पूजा करने वाले रामकृष्ण और गांधी कम हैं, यों कहिए नगण्य है। आज नारी को आर्थिक स्वतंत्रता चाहिए। अन्यथा दासी तो बच्चों को दासता का ही पाठ पढ़ायेगी।

विचारों में डूबी सरस्वती को खयाल आया कि बरसात रुक गई है, वह बोली—मैं चलूं, बहुत देर हो गई है। चिंता न करें.......

अरविंद को उस दिन कुछ अच्छा नहीं लगा, न कुछ लिखा

न पढ़ा। खाना खाने बैठा तो वह भी हलक के नीचे नहीं उतर रहा था। विचारों में थक हारकर जल्दी सो गया था, पर रात तारे गिनते गिनते ही कटी——। निर्मम नियति के आघात से कोई नहीं बचा। वहां निर्धन और धनवान का कोई अन्तर नहीं है।

मन कहीं फंस गया·······

× × × ×

सरस्वती को कुछ आभास हो गया था कि घनश्याम और उसके पिताजी का धंधा तस्करी से सम्बन्धित है। उनके कोई कारखाना या बड़ा व्यवसाय नहीं। छोटी मोटी दूकान से लाखों रुपया कहाँ से आता है? उसने सोचा पुलिस में रपट··· बिना प्रमाण के कौन आफत मोल ले पर वह सामाजिक रूप से तो भंडाफोड़ कर ही सकती है। वह दलदल में फंस गई थी।

दूसरे दिन दैनिक अखबारों में (सुर्खियों में)—

बड़ाबाजार के बड़े राजनीतिक दल के जिलाध्यक्ष एवं तस्कर घनश्याम जैन की खोज में दिल्ली की विशेष पुलिस—सोने के चोरानयन का भंडाफोड़···।

घनश्याम इस अज्ञातवास में बम्बई में खूब रहा। बम्बई की चालों और झोपड़ पट्टियों में रहते-रहते वह ऊब गया था। गुमनाम से पत्र भी आने लगे। राम शर्मा अपना नाम रखा था···।

एक दिन चाल में सिम्मी और उसका चाचा गीतेश पहुंचे।

-ताश और पेग चल रहे थे…। गीतेश ने उसे हमदर्दी दिखाई… सिम्मी के घड़ियाली आँसू। सिम्मी से उसका पत्र व्यवहार बहुत दिनों से चल रहा था। लेडी डाक्टर ने उसे जल्दी नहाने का आग्रह किया। बड़े दिनों की पार्टी है, होटल में उसके चाचा की संस्था 'अन्तर्राष्ट्रीय शांति संघ' की सदस्यायें आइ हुई हैं।

गुलाबी जाड़े की हवा से मन में सिहरन दौड़ रही थी। गर्म पानी से वह नहा धोकर चाल के साथियों से (गिरोह के अन्य लोगों से भी) विदा होकर गीतेश और सिम्मी के साथ हो लिया। उसने दाढ़ी बढ़ा ली थी एवं काला चश्मा लगाने लगा था—सिर पर जोधपुरी टोपी।

मौसम की हल्की ठंड और होटल के वास्तविक माहौल की खुमारी—बड़े दिनों के नाम और कैबरा; देशी विदेशी रंग-बिरंगे नर-नारियों का जमघट; बेस कीमती परिधानों की भड़ास, तपते जिस्मों के अल्हड़पन की टकराहट—बेलाग भाग-दौड़, स्वछंद मादक यौवन, फैशन-परेड। होटलों के कमरे, टेबलों की खचाखच बुकिंग, विवाहित और अविवाहित युग्म, बाहों में बाहें डाले, क्षीणकटि, पीन-पयोधरा, श्लथ नितम्ब सुन्दरियों की अनियोजित प्रदर्शनी—गुड मोर्निंग …मोर्निंग सेम टू यू—वा……वा…हेलो…हे…हाऊ आर यू मिस …।

लो कट ब्लाउज, मिनी मैक्सी स्कर्ट, स्विटर, स्कार्फ, अधनंगी साड़ियाँ—गोरे, गदराए गले और वक्ष…श्यामाएँ-लिपस्टिक, पाउडर, कपोलों पर गुलाबी, बैंगनी, रूज, हीना,

: दिगंबर

गुलाव, मुश्कम्बर का इत्र; फ्रांससी सेंट;—जूड़े मूंपनुमा, मधु-मक्खी के छातेनुमा, हार और हीरे जवाहरात की चलती-फिरती प्रदर्शनियाँ, कर्णफूल, टोपस, हैंडबैग—मेरे भगवान ! बीच-बीच में टोपलेस, (प्राकृतिक वक्ष)…पुरुषों के तरह-तरह के सूट, ड्रेनपाइप, वेलबोटम, गुलाबी, पीली, नीली, हरी, श्वेत, काली, हरी, आसमानी और तिरंगी टाइ… ।

रात को १२ बजे फ्रांस की मिस लीसा डेस्टी का कैबरे लोग प्रतीक्षा में—सूई गिरने की भी आवाज नहीं। सब साँस रोके बैठे थे। होटल के प्रबन्धकों ने घोषणा की—मिस लीसा का तूफान आनेवाला है।…३० सेकंड के बाद चकाचौंध कर देने वाली रोशनी में कामदानी और सितारों वाली पोशाक से लदी हार और कर्णफूलों से बँधी, खटखट करती विदेशी नर्तकी हाथ 'वेभ' करती, सरसराती दर्शकों के पास से निकल गई। आर्केस्ट्रा एवं मिस के सहायक अपने-अपने स्थान पर तैनात थे।

घनश्याम जैन (राम शर्मा) और सिम्मी तथा गीतेश सब जमकर बैठे थे। टेबलों पर गुजराती, एंग्लो-इन्डियन, पंजाबी, मारवाड़ी, बंगाली, मद्रासी—सभी कैबरे का आनन्द लेने आये थे। पर सब आधुनिक विदेशी लिबास में थे। थुलथुल सेठानियाँ और सरदारणियाँ भी ऊँची एडी के सैंडल और पटलीवाली साड़ियों में कैद थीं। बील के फल की तरह के यौवन को ढाँकने के लिए स्पेशल चोलियों में जकड़ी वे बड़े दिनों के उत्सवपूर्ण माहौल का आनन्द ले रही थीं। यह था होटल ताजमहल।

'''पेग पर पेग। गंगाजल पीने वाले होटलों में जायेंगे क्यों अगर जाते हैं तो पेग के आदी हो जाते हैं। मानें या न मानें यह भी एक संस्कृति है और उस विदेशी लिवासमें हमें शर्म नहीं थी तो इस सोमरस में क्या है? जो भी हो। मस्ती छन रही थी। घनश्याम और सिम्मी भी इस पेय को चख रहे थे। गीतेश अपने दोस्तों में मस्त था। इन लोगों के लिए यह माहौल कोई नया नहीं था। गीतेश सिम्मी का चाचा ही नहीं उसके सुख का भी खयाल रखता था। घनश्याम से परिचय कराने में भी उसी का हाथ था। सिम्मी और गीतेश की एक नई मित्र को छोड़कर बाकी चारों भी इस वातावरण को पूरी तरह आत्मसात कर चुकी थीं। जो नई-नई है वह भी पुरानी हो जायेगी। 'मैजोरिटी मस्ट बी ग्रान्टेड'''लीसा—लीसा—मधुर संगीत ध्वनि—थिरकता जिस्म नाचती आत्मा—एक ही ताल पर मैक्सी गायब—मिनी स्कर्ट और ब्लाउज—

घनश्याम और सिम्मी—गीतेश और उसकी मित्र बालाएँ सब बुदबुदा रहे थे—दसों दिशायें मस्ती सोमरस का असली रूप—परियों का आलम—

लीसा नृत्य करती करती पसीना पसीना हो रही थी—'आइ लभ यू' की ट्यून'''पर लाल छड़ी की तरह वह थिरकती गई, लास्य का नाम सार्थक कर रही थी। लाल लिबास में वह फब रही थी।

अगले दौर में उसने मिनी स्कर्ट और ब्लाउज उतार फेंका।

काला ब्रीफ और ब्रासियर। गोरे गदराए टोयलेटी शरीर पर काले परिधान और भी खिल रहे थे।

कवि पंत की 'प्रतिहत वसना छाया' से भी प्रतिस्पर्धा करने वाली""पन्द्रह मिनट तक वह ताल पर समन्वय करती रही—पूर्ण यौवना, उरु और जानु की गति—उस मसृण प्रकाश के स्पर्श से मंडित सौन्दर्य।

सिम्मी को पता ही नहीं था कि हॉल में कोई है—वह गाफिल, घनश्याम धुत्—

१२ बजकर ५५ मिनट हो गए थे। साढ़े चार मिनट बाद कुमारी लीसा का अन्तिम पोज सम्पन्न होने वाला है।" फिर १ बजे समापन।

१२ बजकर ५६ मिनट पर लोग अपनी अपनी जगह पर अकड़ कर बैठ गए। ३० सेकंड बाद फाइनल नृत्य पोज और समापन होने वाला है।

३० सेकिंड पर लीसा एक पारदर्शी काली जाली उड़ाती हुई बिना ब्रीफ और चोली के, श्वेत आदिवासी की तरह नृत्य कर रही थी। १ बजते ही वह काला जालीदार वस्त्र उसने अंग प्रत्यंगों पर कसकर बाँध लिया। हूटिंग—आवाजें—सिट्टियां कैबरे समाप्त। सिम्मी, घनश्याम, गीतेश एवं मित्र अपने अपने कमरों में चले गये थे। बाकी लोग अपने-अपने घर या कमरों में।

दूसरे दिन सुबह के अखबार में देखा—पुलिस बम्बई में

घनश्याम का पीछा कर रही है—सिम्मी और गीतेश के होटल की तलाशी हो रही थी। घनश्याम फूल बेचनेवाला की टोकरी लेकर पिछले दरवाजे से निकल भागा। पुलिस ने कमरा नं० १० पर छापा मारा। डाक्टर सिम्मी और गीतेश के कमरे और सामान की तलाशी ली गई।

गीतेश का पता ठिकाना लिया—लेडीडाक्टर का भी।



सिम्मी को इन्फलूएँजा हुआ तो डा० प्रेमनाथ ने डाक्टर को फर्ज निभाया। जब वह एक दिन मिक्सचर पिला रहा था तो सिम्मी के सारे तन-बदन में सिहरन सी दौड़ गई। कंधे और रीढ़ में दबाव महशूश होने लगा—वह बैठ गई एवं कूल्हे तक लहराने वाली रेशमी काली जुल्फो को गर्दन के पास बांधने लगी। उस उलझन और असमंजस में अतीत वर्तमान और अनागत के संकेत में अल्हड़ लेडी डाक्टर का यह क्या हाल। उसे बिस्तर पर फांसीसी उपन्यासकार दाफने दुमारिया का उपन्यास पड़ा था—जो जाते प्रेमनाथ ने देखा। दूसरे दिन फिर अंगूरी रंग की साड़ी में उसका गोरा-चिट्टा वदन खूब फब रहा था—कजरारी बड़ी-बड़ी आंखें, श्लथ अंग, पीन थॉरेक्स, क्षीण डायफ्राम। प्रेमनाथ ने खिड़की से बाहर निगाह फेंकी, लोन हरा था, कई पुष्प क्यारियों में पराग से लदे थे, डहलिया का शरीर आंदोलित था। सिम्मी ने उसे बड़ी कुर्सी पर बैठने के लिए कहा, जैसे प्रेमनाथ को सहेज लिया हो।......सिम्मी ने मौन तोड़ा—अधिकतर पुरुष अपने पुरुपत्व की भावना से मुक्त होकर नारी को समझने परखने में असमर्थ हैं, आपकी सादगी ने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला है। एक ही पेशा करते हम समाज की सेवा करते है पर आपकी निश्छलता का कौन तिरस्कार कर सकता

है। प्रेमनाथ ने उपन्यास की तरफ इशारा करते हुए कहा इसमें एनी का चरित्र कैसा लगा ?—उपन्यासकार ने नारी हृदय का सपूर्ण अध्ययन किया है, अन्य भाषाओं के लेखकों के लिए भी यह अनुकरणीय है।

डा० प्रेमनाथ को दोस्तों से पता लगा कि सिम्मी के पिताजी उसका विवाह जल्दी कर रहे हैं, बेचारे के हृदय पर सांप-सा लौट गया। घनश्याम और सिम्मी के चर्चे सब जगह चल रहे थे। वही उसके दिमाग में कौंध रहा था—टेलीफोन पर उसने लेडी डाक्टर को बधाई देनी चाही—किस बात की ? शादी की—सगाई तो हुई ही नहीं—आजकल चटमंगनी पट ब्याह होता है—पर किस्सा क्या है डा० प्रेम ?

—आपकी शादी घनश्याम से हो रही है।

—आपको कैसे पता लगा ?

—शादी गमी कोई दुनियां से छिपी रहती है ?

—मुझे पता नहीं।

प्रेमनाथ ने सोचा वह बहाना बना या शर्मा रही है जैसे हर लड़की विवाह के मौके पर करती है।

—बताइये तो सही, हमलोग एक अभिनन्दन पत्र छपा रहे हैं—

—बाद में बताऊँगी पर इतना जरूर कह सकती हूँ उस अवारा तस्कर के साथ तो नहीं हो रही है।

प्रेमनाथ को ढाढस बंधा, पूछा—

—तो बता दीजिए

—पूछने का अधिकार आपको है क्या ?

प्रेमनाम सकपका गया—नहीं, नहीं। हमलोगों का एसोसियेसन एक पार्टी देना चाहता है, अगर आपको एतराज नहीं हो तो......बुरा मान गई, मुझे माफ कर दीजिए।......

माफी किस बात की ? अभिनंदन पत्र में आप अपना नाम ही छपा दीजिए।

—वह घबड़ा गया, बोला, मुझे शर्मिंदा न करें।—

—अकारण पश्चाताप कर मेरे समर्पण की गरिमा को कम मत कीजिए।

—हड़बड़ाकर उसने 'बाई बाई' कहते फोन को स्टैन्ड पर पटक दिया।——

× × × ×

दूसरे दिन सिम्मी प्रेमनाथ के चेम्बर में गई—धीरे से बोली आप बड़े पलायनवादी हैं।

प्रेमनाथ झेंप गया था और एक नारी के हाथों बेइज्जती सहने की प्रतीक्षा कर रहा था—'आइ एम सो सोरी डाक्टर इफ आई हैव ओफेन्डेड यू'—मेरी कोई ऐसी मन्सा नहीं थी।

वह बोली—आप जिम्मेदार इंसान होकर इतना घबड़ाते क्यों है ?

—इसलिये कि मैंने गैर जिम्मेदारी की बात की।

—मैं आपको कैसे समझाऊँ डा० प्रेम, वह बोला—फिर कभी ऐसी गुस्तारवी नहीं होगी।

सिम्मी—डाक्टर, आइ लव यू। प्रेमनाथ जैसे बेहोश हो गया। सिम्मी—सत्य को नकार कर स्वयं को धोखा नहीं दूंगी एक भले मानस डाक्टर से शादी करूँगी तो मैं और मेरा पेशा दोनों धन्य होंगे। कई बार आपसे कहने का इरादा किया पर आत्म-स्वीकृति में होठ ही नहीं खुले—परन्तु आपने—बांहे प्रेम के गले मे डाल वक्ष में सिमट गई।

× × × ×

इधर सरस्वती ने समाज में घनश्याम का भंडा फोड़ किया। समाज सुधारकों ने भी उस पर थूकना शुरु कर दिया। जो समाज-सुधार के विरोधी थे उन्हें तो सुनहला मौका ही मिल गया। वे कहने लगे ये झूठे समाज सुधारक भले घरों की लड़कियों को वरगलाते है। संस्थाओं मे, नाटक कंपनियों में उन्हें पहिले सम्मान देते हैं फिर शोषण करते है। एक तरह के ये डिस्कोथेक है। कलकत्ते में देखिए—जो वेचारे अच्छे समाज सुधारक थे वे इस कीचड़ से अलग हो गए—श्री ईश्वरदास एवं श्री सीताराम को ये प्रेमविवाह आदि अच्छे नहीं लगते। कुछ लड़कियाँ भी बदमाश और उच्छृङ्खल है जो एक पत्रिका निकाल रही है उसमें खुलेआम प्रेम विवाह और मुक्त यौन का प्रचार कर रही हैं। वेचारी एक दो लेखिकायें संयत और चरित्रवान रूप में अपने आपको पेश करती है। जहाँ पाश्चात्य लोग घोर भौतिकता से ऊबकर 'हरे राम हरे कृष्ण' विचारधारा को अपना रहे है, हमारे नवयुवक विलासिता के गहरे कुएँ में कूद रहे हैं।

सरस्वती पहिले विवेकानन्द रोड के एक विद्यालय में अवैतनिक रूप में समय देने लगी। बाद में कुछ भत्ता लेना स्वीकार किया।

बालिकाओं मे उसका मन रमता चला गया। वह चाहती थी कि इन भावी गृहणियों को सुदृढ़ एवं दुर्भेद्य आधार दिया जाय। वह स्वयं ठोकर खा चुकी थी पर इनको वह समाधान देती जाती थी जिसे वे भविष्य में गलत लोगों से सावधान रहे। वर के बारे में तफसील से जाने बिना शादी न करें एवं अपने आदर्शों को दृढ़ता से अग्रसर करें। बालिकाओं की वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ करवाती जिसमें अनुकूल विषयों पर चर्चा होती। बालिकाओं के लिए खेलकूद एवं साहित्य तथा जीवनोपयोगी विषयों को अधिक महत्व देती थी, चाहे वे अन्य विषयों में कमजोर ही क्यो न रहें।

× × ×

सिम्मी बीते दिनों की कल्पना में—

सिम्मी सम्वेदना दिखा रही थी। आदतन वह अल्हड़ थी पर प्यार तो घनश्याम से था ही। वह स्वतंत्र रहते-रहते ऊब गई थी, खूंटे से बँधना चाहती थी। घनश्याम का अज्ञातवास देखकर बार-बार ध्यान मग्न हो जाती थी। पूछती थी—कितने दिन इस दूसरी दुनिया में रहोगे। अच्छा हो कि तुम सरकार को आत्मसमर्पण कर दो एवं आजाद इन्सान की तरह सम्मान से घूमफिर सको। घनश्याम ने सान्त्वना दी—वह अपना सिर उसकी गोद में रखकर सुबकने लगी। क्या इसी सबके चलते

जिन्दगी बसाने के वादे किये थे। इन्सान आखिर इन्सान है—वह पक्षियों की तरह उड़ नहीं सकता। कल्पना की एक सीमा होती है।

सूजी हुई आँखें, कपोलों पर अश्रु उसकी (नारी की) मनः स्थिति की कहानी कह रहे थे। उन दोनों को अपने पिछले जीवन की दृश्यावलियाँ अन्तराल में दीख रही थीं। अच्छा बुरा जो भी किया था वह सब गुजर गया पर अब एक निर्णय कर जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाना है। परिवार और गृहस्थी जिस तौर-तरीके की इज्जत नहीं देती वह नकली है चाहे हमें उससे सुख मिले। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है—समाज के नियम कायदों को माने बिना दूर नहीं रह सकता। अच्छा बनने की प्रतिस्पर्धा कर सकता है पर बुरा बनकर सदा-सदा सब व्यक्तियों को धोखा नहीं दे सकता। कलकत्ते में घनश्याम की इज्जत थी पर गलत कदम उठाने से, असाधु व्यापार करने से, एकदम उच्छृङ्खल चरित्र का पालन करने से वह आज इस स्थिति में आ गया है। आज भी खाना खाता है, उठता-बैठता है, रुपये खर्च करता है पर वह सम्मान नहीं पा सकता। मनुष्य की विचारधारा भिन्न होना कोई जुर्म नहीं पर नेकी और बदी में से नेकी को चुननेवाला ही समाज में रह सकता है।

सिम्मी को भी उसकी अपनी विगत उच्छृङ्खलता खल रही थी। वह नेक चलन नारी बनकर जीने का तमन्ना संजोये बैठी थी। उन दोनों को सरस्वती का स्मरण हो रहा था जिसने

अपनी दृढ़ता का परिचय देकर समाज में एक इज्जत का स्थान पा लिया था। उसने सामाजिक कोई बड़ा काम नहीं किया पर अपने जीवन में अडिग पथ की पथिक होकर एक उदाहरण उपस्थित किया है। अब पता नहीं क्या कर रही है। वे लक्ष्मी जैसी कम पढ़ी लिखी लड़की की भी वादा दे रहे थे। वह भी बेचारी टीबी से ग्रसित है···। अरविन्द एक लेखक है, अपनी जगह वह भी सिर ऊँचा उठाकर चल रहा है। फिर क्यों न हम···।

सिम्मी ने खाना नहीं खाया था। घनश्याम को जैसे धक्का लगा। तुमने सुबह से कुछ खाया नहीं है। जल्दी हाथ-मुँह धोकर कुछ खा-पी लो। सिम्मी ने कहा—वादा करो कि अब आस्ते-आस्ते इस रास्ते को छोड़ दोगे एवं जीवन की इसी मोड़ से अन्य स्वच्छ रास्ते में मुड़ जाओगे। घनश्याम के पास कोई विकल्प नहीं था उसकी आत्मा यह धंधा करना नहीं चाहती थी पर उसके पिताजी···।

× × × ×

आकाश में सतरंगी इन्द्रधनुप तना हुआ था—वह वर्षा के दिनों में कट फट गया था, पक्षियों की कतार उड़ी चली जा रही थी, तेज झंझावात सारे अंचल को उद्वेलित कर रहा था, मखमली हरियाली—यह सब अरविंद को काटने दौड़ रहे थे। स्थिति एक विक्षिप्त व्यक्ति जैसी थी जो कपड़े खोल फेंकने पर आमादा था। सरस्वती से विछोह की आशंका से वह सिहर

... मन के गर्भ में कठिनाइयों का संग्रह हो रहा था, अविकल अशान्ति में वह जी रहा था। विचारों के इसी घात प्रतिघात में उसके सपनों का संसार खंडित हो रहा था।

× × ×

घर, घर,ऽऽ.......घर,ऽ......हल, सरस्वती.......'बोलिए...
...कैसी तबियत है ?'

—विशेष कुछ अच्छा नहीं लगता है, मुझे बड़ी फिक्र हो गई
लिए, अमानुष या परिवर्तन देख लिया जाये—दर्पणा और
ाइट हाउस में चल रहे हैं—दिल बहल जायेगा. आप नाहक
रेशान हो रहे हैं.......

—अरविंद अन्यमनस्क-सा बोला—चलिए, लाइटहाउस मे
ऊँ,......मैं जकरिया स्ट्रीट आ रहा हूँ।

रिक्शा नहीं मिला, पैदल ही चल पड़ा—रास्ते मे पानी
ा था, मछुआ में कूड़े का बेलाग ढेर, फल पट्टी एक नर्क बन
थी। आगे बढ़कर कृष्णा सिनेमा पार करता हुआ जक-
ा से सरस्वती को लेकर चौरंगी पहुँचा। परिवर्तन की कहानी
वह और सिहर उठा था—गरीबी के कारण लड़कियों की
ी नहीं होती और वे पैसे के लिए नौकरी और समझौता
करने लगती है, यह समाजिक व्यंग उसी को चुभ रहा था...
ी बहिन की शादी का क्या होगा। (वह सोचने लगा)—
से बाहर निकला तो वह पसीने से लथपथ हो रहा था।
र तूफान चिंघाड़ रहा था, वातावरण सनसना रहा था.

हाथ : · पचासी

सहसा एक घटाटोप अंधेरे ने पूरे माहौल को जैसे अपने में लपेट लिया। टैक्सी के कांच तड़तड़ा रहे थे। वह सरसी के हाथों को थामे मौसम की इस उपद्रव को अनुभव कर रहा था। झटास हमला कर रही थी, विजली की कौंधती रेखायें मन को आन्दोलित कर रही थीं, धमाका और विस्फोट विस्फारित नेत्रों से दोनों यह सब देख रहे थे; दो सच्चरित्र और सिद्धान्तवादी मन अडिग थे, (सरस्वती सोचने लगी कि किस तरह पिछले दिनों दो नेताओं के लड़के लड़कियाँ विवाह पूर्व ही पाश्चात्य भ्रष्ट कोर्ट शिप के शिकार हो जाते हैं—अध कचरे प्रेम में फंसकर युवा मन को लांछित करते हैं—वह अरविंद के आचरण की वड़ी इज्जत करती थी, वह भगवान से वह माँगने लगी कि अरविंद उसका ही हो—), दोनों विवेकानन्द रोड ही चले गए। गमलों के वेला और मोगरे के फूल एक दूसरे से आवद्ध थे, जल प्लावित घर में गौरैया फुदक रही थीं, छुट्टा नौकर आया, चाय बनाने लगा अरविंद सरसी जाकर कुर्सियों में धंस गए। मौन तोड़ते हुए सरस्वती वोली—फिल्म कैसी थी?

—बोर, पर एक दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता……

—देश और समाज पर एक कटु व्यंग, यह है भारत का सामाजिक परिवर्तन, गरीवी से पिसती हुई वालिकाओं का इतिहास—लगता है आर्थिक दृष्टि से परतंत्र नारी ने इस कलुपित सामाजिक इतिहास का समस्त वोझ अपने ऊपर ले लिया है, क्या सही सामाजिक न्याय है?

—मेरी बहिन का क्या होगा ?

—सब ठीक होगा, मुझे पूरी आशा है।

—तो आपको और मुझे त्याग करना पड़ेगा····

(एक अज्ञाने भय से वह डसा जा रहा था)

सरस्वती कुछ समझी नहीं, फिर भी वह चुप रही—उसने सोचा अग्नि-परीक्षा अवश्य होगी·····

अरविंद बोला—समाज, धर्म और व्यापार की वेदी पर पचास प्रतिशत लोग बलिदान अवश्य होते हैं—स्वार्थ की बात नहीं है, यह तथ्य है. जिसे कोई समाज शास्त्री, कोई सामाजिक नेता नहीं नकार सकता। थोड़ी दूर पर हनुमान जी और काली माई का संयुक्त मन्दिर था उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा—यह जो घंटा बज रहा है, भक्तों की जयघोष की ध्वनि गहरा रही है, ज्यादातर उन लोगों की है जो प्रताड़ित हैं, अंधविश्वास में जी रहे हैं, फिर भी जिंदा हैं। ·····सरस्वती ···सिद्धार्थ ने अपने समय आसपास रोग और कष्ट देखकर गृह त्याग दिया था, पर कलियुगी सिद्धार्थ क्या कर रहे हैं ? बुद्ध और अशोक के सिद्धान्तों का झंडा फहराने वाले तो इस स्थिति से खुश हैं। लोगों को मालूम नहीं कि 'राज करते राजा जइहे, रूप करते रानी, वेद पढ़ते पण्डित जइहे, रह जइहे नेक निशानी।'

अरविंद सरस्वती को रिक्शे पर बैठाकर वापिस लौट रहा था तो गिरीश पार्क के पास वाली बस्ती में देखा दो खाते-पीते घरों के लड़के एक अट्ठारह वर्षीया बालिका का हाथ पकड़े

झौपड़ी में घुस गये थे—यह धन और निर्धनता में संघर्ष का प्रतीक।

घर जाकर उसने सबसे पहिले तार कार्यालय में यह तार भिजवाया 'रमेश रीता की शादी पक्की'

× × × ×

दो दिन बाद उसने सरस्वती को यह पत्र लिखा—

प्रिय सरसी,

जीवन एक रंगमंच है जिसमें अलग अलग रूप में अभिनय करना पड़ता है। यह अभिनय कोई सिखाता नहीं, स्वभावतः किया जाता है। यह अनुत्तर दायी व्यक्ति कलकत्ता छोड़कर जा रहा है—अपनी बहिन के सुख और स्वयं की यातना के लिए। आप और मैं दोनों बलि के बकरे हैं—लालची समाज हमारा प्रोम्पटर है। मुझे क्षमा कर देना।

—अरविंद

लिफाफा बंद कर हवड़ा स्टेशन जाकर डाक में डाला। डीलक्स एक्सप्रेस से दिल्ली रवाना हुआ। विचारों का तारतम्य लग गया—पण्डितजी ने पञ्चाग खोलकर बताया था कि नवम्बर में विवाह के लग्न हैं, ७ तारीख को अपनी शादी तय करके ठेकेदारजी से पच्चीस हजार रुपये मिल जायेंगे, उन्हीं रुपयों में से बीस हजार लगाकर रीता की शादी ठाट-बाट से कर

दूंगा। जिंदिन मैं योग्य भाई होने का दम पा रहूंगा—इस विध संतोष से उसका सीना फूल गया था।

रेलगाड़ी मे वैसे ही नींद नहीं आती पर अरविंद की मन स्थिति ही भिन्न थी, अशांत मन से वह सीट से बाथरूम तक गुसल खाने से सीट तक चक्कर लगा रहा था। फिर लेट गया, उसका मन मुक्त पंछी की तरह खुली उड़ानें भरने लगता। गाड़ी रुकती तब स्टेशनों पर कुलियों और चाय पान बेचनेवालों की चिल्लपों, नये यात्रियों की भीड़, रेल-पेल—सामान बाहर फेंक दो 'साले का'......गरीब यात्री मिन्नतें करते हुए 'बाबूजी गाड़ी छूट जायेगी, जरा,......' पर अरविन्द इतना बेसुध था कि कोई उसका सामान उठाकर ले जाता तो भी कोई पर्वाह नहीं थी। ......संतोष और कायरता में टकराव था। संतोष बहिन के भले के लिए किये गये त्याग पर और कायरता का योग्य साथी को छोड़कर साधारण बालिका से शादी के लिए तैयार हो जाने पर अनुभव हो रहा था। ......बिना रिसते हुए दर्दीले फोड़े की तरह अंतस लहर रहा था।......वह सरस्वती को दोष दे रहा था कि पहले वह राजी हो जाती तो विवाह हो जाता फिर रीता के लिए भी कोई सम्बन्ध मिल जाता......सोचने लगा लड़कियाँ अनिश्चय में जीती हैं तभी लड़कों के पिता दहेज की मांग करते हैं, वे शोषण के ही काबिल हैं, ढुलमुलपन का कोई क्या करे'' कभी अपने को दोष देता......कैलिडोस्कोप की तरह रंगमंच के रंग बदल रहे थे......, संतोष, कायरता, निराशा और

ग्लानि, कैलेडो स्कोप में इन भावों को, लाल, नीले, काले और मटमैले रंगों से प्रदर्शित किया जा सकता है—वे ही रंग उसकी आँखों आगे घूमने लगे।

दिल्ली स्टेशन आया तो हाथ मुँह धोकर तैयार था। जल्दी जल्दी में खटारे ताँगे में ही बैठ गया—चाँदनी चौक (बृजनाथ कूचे में घुस गया)

× × ×

पास के पब्लिक टेलीफोन से ठेकेदारजी को अपने आने की सूचना दी। घर पर माँ को बताया कि ठेकेदार की लड़की से शादी करलूँगा तो बुढ़िया बाँसों उछलने लगी।...... इतनी मनौतियाँ मनाईं थीं, मन्दिर देवालयों के दर्शन बेटी को करवाये, उपवास-व्रत दोनों ने रखे, शिवजी पर जल चढ़ाया, कंगालों को अन्न बांटा था। जवान लड़की घर में बैठी थी, हाथ पीले करने का सौभाग्य नहीं मिल रहा था, रात दिन घुलती रहती थी, न दिन में सुख न रात को चैन। बिना पैसे के विवाह होना पहाड़ लग रहा था। साधु महात्माओं के जंतर डोरे भी काम नहीं कर रहे थे, इस नीरसता से वह ऊब गई थी। ......अरविन्द की स्वीकृति सुनकर बुढ़िया ने मिठाई बाँटी। हर माँ की यह पहली साध होती है कि उसकी बेटी के जल्दी से जल्दी हाथ पीले हों......। अरविन्द की माँ ने भी अरविन्द को जी खोलकर आशीष दिया......। पर वह सोच रहा था—इस दरिद्र देश में लोग पहले शादी की उतावली में

रहते हैं, परिणामतः बच्चे हो जाते हैं, गरीबी के कारण इनके भरण पोषण के लाले पड़ जाते हैं. वे भिखारी, चोर और कुपथ-गामी बन जाते हैं, शिक्षा की बात तो दूर ....। लड़कियों की शादी के लिए माँ-बाप, भाइयों को त्याग करना पड़ता है...... यह अन्याय है, पर छोटी बहिन बेचारी क्या अन्याय करती है. ...यह सामाजिक अन्याय है, सरकार को इसका निराकरण करना चाहिए, समाज को इसका निदान ढूंढना चाहिए। ...इस कुचक्र का अन्त होना चाहिए, वह एक अजीब पशोपेश में था......फिर उसने मन को समझाया कि रीता के प्रेम के कारण उसे सब कुछ करना पड़ेगा सहना पड़ेगा। व्यक्तिगत परोपकार एक मजबूरी है, देश की सेवा आवश्यकता है पर आज व्यक्तिगत परोपकार, अपने परिवार की भलाई के कारण ही तो सामाजिक बुराइयाँ पनपती हैं, भ्रष्टाचार फैलता है ..। एकबार तो उसके जी में आया कि वह शादी से इन्कार करदे पर मन मसोसकर रह गया। रीता के स्थायित्व और उनकी काल्पनिक हरी-भरी बगिया की सुषमा के खातिर सब कुछ अंगीकार...।

× × ×

घर में अरविन्द की बुढ़िया माँ तुड़ी-मुड़ी बैठी थी। अल-गनी पर कपड़े लटक रहे थे, जिनसे एक अजीब गंध निकलकर नथुनों से टकरा रही थी। इस दमघोंटू वातावरण में दीवार की चित्रकारी एक मजाक प्रतीत होती थी। झुर्रीदार फरसार

नीम अंधेरे समय में बुढ़िया की चील की तरह फली पलक उठ-गिर रही थीं। उसकी विरक्त आँखों में कीचड़ था पर अब से भविष्य आशामय लग रहा था—रीता के हाथ पीले होंगे, अरविंद की शादी होगी। उसके कंधों से एक बोझ उतरने जा रहा था।

कमरे की खिड़की पर धूप का फ्रेम टंग गया था। दीवार के एक गोल छेद से धूप का चक्कर उसके बाजू पर चिपक गया था। कुछ लमहों के सन्नाटे के बाद वह बोली—बेटा, पिंरिंस-पल जी से मिल आओ…। अरविन्द उसके उतावले पन को समझ रहा था, नहा धोकर तैयार होकर, आशावाद लिए श्री अरोड़ा के घर पर जाकर कॉलबेल बजा दी। अरोड़ा ने दर-वाजा खोला—अरे, चोपड़ाजी! नमस्कार, आइए! कब आए। आपका कोई पत्र नहीं आया तो हमने तो समझ लिया आपको रिश्ता…। अरविन्द—"माफ कीजिए, मैं व्यस्त था, उधेड़-बुन में था, आज पक्का इरादा लेकर आया हूं। सगाई का मुहूर्त दिखा लें…।

पता लगा कि रमेश की सगाई पक्की हो गई, शादी अगले महीने होने वाली है। अरविन्द को काटो तो खून नहीं, एक अजीब सुन्न शरीर में व्याप गई थी…।

× × ×

साधारण शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर एक किरानी से रीता की शादी कर दी गई। उपरोक्त घटनाओं के

गम की छाया में अरविन्द विक्षिप्त-सा रहने लगा।

कवि सम्मेलनों में कभी-कभी पहुँच जाता था, उसकी एक कविता बड़ी मशहूर हो गई थी :

"ओ पत्थर के भगवान्

मूर्तिकार के बेटे

मेरे कृपा निधान !

....।।"

× × × ×

कवि सम्मेलन से लौटते समय लैम्प पोस्ट की मद्धिम रोशनी में देखा, दो लड़कियाँ तेज उतावले कदमों से चली जा रही थीं। रीता को पहिचाना, पास बुलाया—वह सकपका गई थी पर सोचा अभी बच्ची है, शर्मा गई है। रीता सब्जी लाने का बहाना बनाकर वहाँ से चल पड़ी। अरविन्द को संदेह हो गया था, कुछ उत्सुकता भी थी कि रात के सात बजे कहाँ जा रही है। ...खारी बावली में एक पतली गली के मकान नं० ४ में दोनों घुस गईं। उनको जीने पर चढ़ते देखा था पर जब अरविन्द जाने लगा तो दरबान ने रोक दिया। अरविन्द ने कहा कि जो रीता देवी अभी अभी ऊपर गई है मैं उसे जानता हूं, उससे मिलना चाहता हूं। दरबान ने उसे घुड़क दिया—"यहाँ कोई रीता-चीता नहीं रहती, न आती है यह लड़कियों का संगीतालय है, यहाँ आदमियों को इजाजत नहीं।......

उसे दाल में काला नजर आया, उसका संदेह शक्ल धारण

करने लगा। वह एक घंटे तक कोने में जाकर बैठ गया, लड़कियाँ आती जाती रहीं, कारें चक्कर लगाती रहीं—वह आँखें फाड़फाड़ देखता रह गया। रीता को परिचानने की कोशिश करता···। बहुत देर बाद एक कार में दो लड़कियाँ जाती दिखाई दीं। कार मे पर्दा लगा था, उसने अपने संदेह को अनुमान के साथ बाँध दिया। वह गाड़ी के पीछे पीछे हो लिया, दो फलांग जाने पर देखा वह गाड़ी खराब हो गई है। पन्द्रह मिनट तक ड्राइभर ने जी-तोड़ कोशिश की पर गाड़ी रवाना न हो सकी। उसने लड़कियों को इशारा किया कि वे चुपचाप तांगा पकड़ कर चल दें। वे दोनों दौड़ती हुई चाँदनी चौक की तरफ बढ़ गई और तांगा तलाशने लगी। पीछे से दौड़ता हुआ अरविन्द पहुंचा। उसने रीता का हाथ पकड़ लिया···· "सब्जी उस मकान न० ४ में बिकती है, देखें कैसी सब्ज़ी लाइ हो।" झोले में स्नो, पाउडर और मनी बेग में दस रुपये थे··। "कमीनी, कुलटा···" कहते कहते अरविन्द को दिलका दौरा पड़ा, वह गिर पड़ा था।

रीता उसे अपने घर तांगे में बैठा कर ले गई। घंटों बाद होश आया····रीता का पति धर्मचन्द भी नौ बजे तक घर आ गया था।

अरविन्द थोड़ी देर रहकर एवं धर्मचन्द से कुशल क्षेम पूछकर दूसरे दिन बहनोई के साथ घर चला गया। उस विषय में

बिल्कुल मौन रहा। उसके मन को यह गम्भीर घटना सालती रही।

× × ×

समाज सम्मेलन पाँच वर्ष बाद फिर आयोजित किया गया। सभापति एवं प्रधान अतिथि सरस्वती एवं लक्ष्मी के पिताजी तथा प्रधान वक्ता उस इलाके के सांसद थे। अनेक नये और पुराने दोनों प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये। नारियों को पिताजी की सम्पत्ति का उत्तराधिकार एवं विवाहिताओं का सम्पत्ति पर अधिकार अधिनियम पर भी जोरों की बहस हुई।

एक प्रमुख सदस्य ने इस बात पर भी टिप्पणी की कि हमारे पिछले अधिवेशन की प्रमुख कार्य कर्त्री बड़ी तकलीफ में है, सरस्वती एक अध्यापिका है एवं सामाजिक सन्यास-सा ले रखा है। डा० सिम्मी समाज का कलंक बन गई है। दहेज के अप्रत्यक्ष प्रभाव के कारण अरविन्द की बहन रीता ने आत्महत्या कर ली। सरकारी सहायता के बावजूद अगर दहेज की घातक प्रथा मौजूद है तो इस संस्था को विघटित कर देना चाहिए या तपेतपाए कार्यकर्ता आगे आयें। सब एम० पी० और एम० एल० ए० लोग भी सक्रिय हो जायें अन्यथा आज की व्यवस्था ताश के घर की तरह ढह जाने वाली है।

तालियों की गड़गड़ाहट और इसके बाद—

